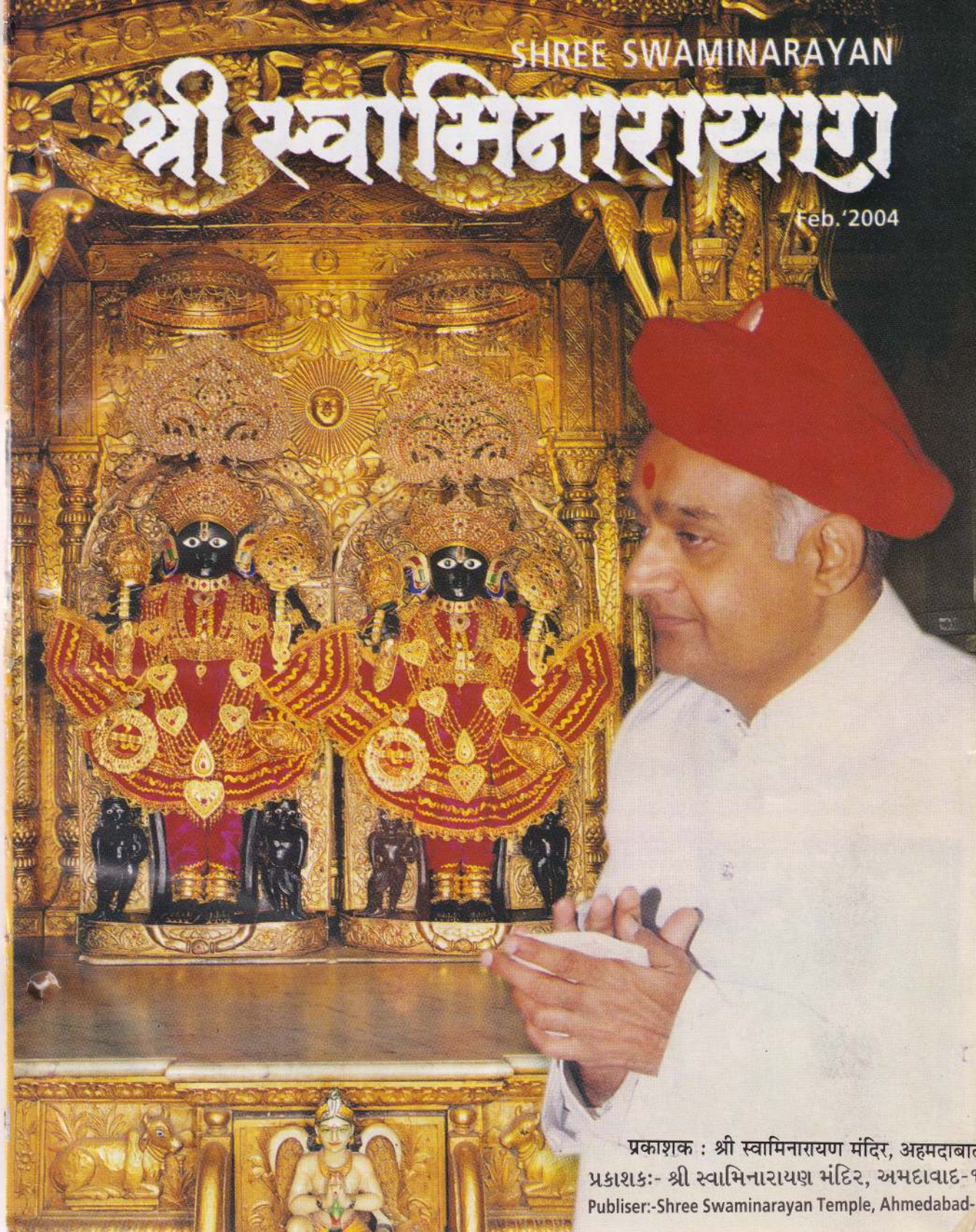
SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

Feb.'2004



प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद
પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publiser:-Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



ईश्वरनगर(मूलीदेश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



लूंटावदर(मूलीदेश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ स्वा.देव प्रकाशदासजी ।





धमासणा मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में समूह आरती का लाभ लेते हुए हरिभक्त गण, साथ में कोठारी स्वा.सत्यप्रकाशदासजी



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२१३३८३५ (मंदिर)
७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश२००१-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

SIREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ फरवरी -२००४

अ नु क्र म णि का

१. अरमदीयम २
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ३
३. तमाकु की भेट : अच्छे अच्छो का मुह बंध कर देता रोग ओरल सबम्युक्स फाईब्रीसीस ७
३. व्यसन मुक्ति १०
४. जो हृदय दे सकता है वह पुत्र भी दे सकता है ११
५. प्रभु तुम बिन मेरो कौन सहाई १४
६. एक के साथ शून्य को जोड़ने से कीमत होती है १५
७. स्वामिनारायण सम्प्रदाय की बहुमूल्यता १६
८. बाल वाटिका १८
(१) शिक्षापत्री महात्म्य
९. सत्संग वृतांत १९

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २१३२१७०, २१३६८१८. फेक्स : २१७६९९२.

अ स्म दी य म्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

वसंत के स्वागत में लोक समुद्राय सागर की तरह पूज्य लालजी महाराज श्रीका प्यार के छांटो को प्राप्त करने तथा मूली के निवासी श्री राधाकृष्ण देव की कृपा प्राप्त करने हेतु हर्षोल्लास के साथ उमटे हुए लोगों को देखकर श्री जी महाराज द्वारा किया गया रंगोत्सव तथा फूलदोलोत्सव में झूलते हुए सर्वोपरि भगवान श्री नरनारायणदेव का स्वस्म अन्तः करण में, मनुष्य मात्र के हृदय में स्वतःसुख देनेवाला होता है। ऐसा दिव्य सुख जीवमात्र को प्राप्त करना है। परंतु ऐसे सुख के दाता का मार्ग शस जीव को मिलता ही नहीं बल्कि विपरीत मार्ग पर जहां दुःख ही दुःख है वहाँ विना विचारे विना देखे दौडते हुए चला जा रहा है। संसार के मुनष्य को जैसे खारे समुद्र में कभी किनारेका दीपक दिखाई दे उसी प्रकार मोक्ष प्राप्ति के लिए सर्ववतारी सर्वोपरि पूर्ण पुस्त्रोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण ने विश्वमें सर्व प्रथम अपनी बाहों में भरकर अपने हाथो से भगवान श्री नरनारायणदेवकी प्रतिष्ठा किये थे वही परमात्मा कल्याण का सुख देने हेतु जीव मात्र को पुकार के कह रहे है - आओ महासुख प्राप्त करने अक्षरधामका मार्ग देखते। ऐसी ही सोपान जहाँ से आत्यन्तिक मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सरलता से मिलसकता है। जगत के असंख्य जीवो को यहाँ से ज्ञान होता है कि "तपसा चियते ब्रह्म" तपसे ब्रह्म की प्राप्ति होती है। तप विना भगवान के स्वस्मका यथार्थ ज्ञान नही होता और ज्ञान विना मोक्ष नही मिलता। "ऋते ज्ञानान्न मुक्ति" यथार्थ ज्ञान विना मुक्ति नहीं मिलती। जिससे सर्वोपरि भगवान श्रीनरनारायणदेव के तप के प्रभाव से इस जीव को परमात्मा का साक्षात्कार होता है। अर्थात सच्चा ज्ञान होता है और आत्यन्तिक मोक्ष मिलता है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जनवरी - २००४

२. पलसाना गांव में प.भ.शैलेशभाई पशाभाई के यहाँ पदार्पण । ३. प.भ.धरमशीभाई पोपटभाई झालावाडिया, एप्रोच प.भ. कनैयालाल बाबूलाल ठक्कर. प.भ. भरतभाई एम.बारोट के यहाँ पदार्पण (मेघाणीनगर) । ४. सोजा - प.भ. घनश्यामभाई मंगलदास पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर । ६. मोटण - शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । घनश्यामपुर (गोळी) (मूली प्रदेश) गांव में पदार्पण । १०. प.भ. संजयभाई परीख, के यहा पदार्पण शीहीबाग तथा साबरमती श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) मूर्ति प्रतिष्ठा स्व. हाथों से । प.भ.शैलेषकुमार बाबूभाई के यहाँ पदार्पण । ११. नारायणघाट मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर । प.भ. नटवरलाल डी.मिस्त्री दरियापुर रमणभाई पटेल एंड के रीलीफ रोड तथा कलोल गुरुकुल पारायण पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण । १२. उंझा प.भ. पटेल वसंतभाई के यहाँ पारायण प्रसंग पर । प.भ. नरेशभाई देवचंन्ददास पांचो दिया के यहा पदार्पण। १३. प.भ.नारायणभाई शिवाभाई पटेल (सोजावाला) के यहाँ शाहीबाग । श्री सहजानन्दगुरुकुल कोटेश्वर शाकोत्सव, प.भ. पटेल हिरलभाई, प.भ. सी. के. पटेल, प.भ. मथुरभाई के यहाँ पदार्पण । १४. अहमदाबाद मंदिर में धनुर्मास धुनि की पूर्णाहुति । प.भ. प्रवीणभाई एच.बारोट के यहाँ पदार्पण । १५. झूलासण गांव में प.भ. कनैयालाल केशवलाल पटेल तथा प.भ. प्रवीनभाई आर.पटेल के यहाँ पदार्पण जोधपुर। १६. विहार शाकोत्सव के प्रसंग पर सी.जी. ज्वेलर्स के यहाँ पदार्पण प.भ. प्रवीनचन्द्र बालकृष्ण उपाध्याय के यहाँ पदार्पण । १७. डॉ.सुरेश कान्तिलाल पटेल के यहाँ पदार्पण । प.भ.जसुभाई अम्बालाल पटेल, प.भ.ज्योत्सनाबहन अरविंदभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । प.भ.महेशभाई केशवलाल पंड्या के यहाँ पदार्पण । १८. प.भ. ईश्वरभाई के यहाँ पदार्पण, हळ्वद दलवाडी समाजवाडी के खात पूजन पर पदार्पण । १९. प्रतापुरा गांव में पदार्पण । २०. से. ५-२-०४ नाईरोबी तथा मोम्बासा (कोनिया) में धर्मप्रवास.



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा

जनवरी - २००४

४. श्री प्रभाहनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा शाकोत्सव एवं कांक रिया से अमदाबाद मंदिर संकल्प रैली में पदार्पण । ९. मेमका, लीलापुर, लखतर(मूली देश) । १०. लींबडी मंदिर में सभा प्रसंग में पदार्पण । ११. माणसा मंदिर शाकोत्सव एवं रात्रि में बापूनगर सत्संग सभा में पदार्पण । १२. भक्तिनगर, श्रीजीनगर, वेगडवाव, लीलापुर, नरनारायणनगर मूली देश । १३. रामगढ एवं अखियाणा गांव में पदार्पण । १५-१६. उटबेठ सामपर, जामसर, गांव में पदार्पण । १७. प्रतापपुरा गांव में पदार्पण । १८. प.भ. रजनीभाई नारायणदास महेता के यहाँ पदार्पण जीवराजपाक । १९. जीवराजपार्क मंदिर में पारायण प्रसंग पर पदार्पण । २१. रणजीत गढ, जेतपुर, खारेची, गांव में पदार्पण । २२-२३. जामसर (हालार) देश के गावो में पदार्पण । २४. मुबारकपुर शाकोत्सव प्रसंग पर कडी गाव में पदार्पण । २५. नारायणपुरा मंदिर संकल्प यात्रा प्रसंग पर पदार्पण । २६. मूली वसंत पंचमी के उत्सव प्रसंग पर पदार्पण । २७. डीसा मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । २८-२९. डॉ. गोविन्दभाई गोपालभाई पटेल के यहाँ परायण प्रसंग पर तथा टोरडा मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । ३०. खोलडीयाद, रामपुरा(मूलीदेश) गांव में पदार्पण । ३१. नारायणपुरा मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री कें षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से सन्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा वर्ष दरम्यान धार्मिक कार्यक्रम नीचे अनुसार हुआ था ।

१. हीरावाडी अमदावाद:- हीरावाडी से अमदावाद मंदिर विशाल पदयात्रा

२. उत्तरायण के दिन झोली मांगने में जो दान मिला वह श्री नरनारायणदेव मंदिर में जमा किया गया ।

३. प्रत्येक एकादशी को षष्ठि पूर्ति के उपलक्ष्यमें सत्संग सभा।

४. श्री स्वामिनारायण महामंत्र नोटबुक का वितरण, १००० कलेन्डर का वितरण - *श्री न.ना.यु.मं.को.ओ. महेन्द्रभाई हीरावाडी*

कलोल

१. ता. १६-११-०३ के दिन षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री नगर मंदिर से समग्र कलोल विस्तार में घूमकर कलोल गुरुकुल तक भव्य धर्मसद्भावना यात्रा तथा व्यसनमुक्ति यात्रा प.पू.लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम से सम्पन्न हुई ।

२. ता. १२-१-२००३ को प.पू.लालजी महाराजश्री की आज्ञा से १२ घंटे की अखंड धुन हुई ।

३. युवक मंडल द्वारा प्रत्येक शनिवार को कलोल में अलग अलग स्थानो पर भजन, कीर्तन, सत्संग होता है । - *श्रीन.ना.दे.यु.मं.को.ओ. मुकेशभाई कलोल*

जेतलपुर

षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा जेतलपुर के अलग अलग गाँवो में १५० से २०० जितने युवक हरिभक्त ट्रेक्टर द्वारा लोक संम्पर्क का कार्यक्रम रखे थे । जिसमें असलाली चोसर, गामडी, जेवडी, नाझ, गीरमथा, मिरोली, बारेजा, नवागांव, महीजुल, पिंगडज, मुक्तिपुरा इत्यादि गांवो में प्रवृत्ति किये थे । - *श्री न.ना.यु.को.ओ. नारायणभाई जेतलपुर*

नारायणघाट

१. ११ वीं जून नारायणघाट मंदिर में धुन कीर्तन सत्संग सभा रात्रि में ८-३० से १०-३०

२. जून ३ से जनवरी ४ तक नारायणघाट विस्तार में प्रति गुरुवार तथा रविवार को रात्रि में ९ बजें जनमंगल की ६० सभा आयोजन किया गया ।

३. ता. १०-८-०३ के दिन नारायणघाट के मंदिर में ७० हरिभक्तो ने समूह महापूजा का लाभ लिया था।

४. ता. १३-९-०३ के दिन शाहीबाग तथा नारायणघाट विस्तार में ९२ हरिभक्तो के घर प.पू.लालजी महाराज श्री पदार्पण करके पुनीत किये थे ।

५. नारायणघाट मंदिर में १४-९-०३ के दिन प.पू.लालजी महाराजश्री के अध्यक्षस्थान पर सत्संग सभा ।

६. जनमंगल ६० वीं सभा का आयोजन ता. ८-१-०४ के दिन स्वा.बाग में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.लालजी महाराजश्री के सांनिध्य में सम्पन्न हुआ । अंदाजित १ हजार जितने हरिभक्त एकत्रित थे । - *श्रीन.ना.दे.यु.मं. संचालक श्री नारायणघाट*

माणसा

१. बापुपुरा तता अलैयागांव में १२ घन्टे की धुन

२. माणसा महंत स्वा. तथा यु.मं. द्वारा रात्री सभा जिसमें नजदीक के सभी गाँव (रमेशभाई कोठारी माणसा)

गवाडा-गांव :- में ६० दिन की धुन हुई, रात्रि में ८-३० सें ९ बजे तक - *संचालक : भरतभाई*

रवणुसा:-में प्रति शनि,रविवार को रात्रि में ८ से ९ बजे कर धुन हुई । *न.ना.यु.मं. डाह्याभाई*

माणेकपुर :-६० घन्टे की धुन पूर्ण हुई । - *संचालक : सं.प्रहलादभाई*

मकाखाड:-१२ घन्टे की धुन पूर्ण हुई । - *संचालक : कान्तिभाई*

धोलका

१. बहनो द्वारा धोलका तथा धोलका देश के गांवो में ६० जितनी सत्संग सभा हुई ।

२. ६०० जितनी मंत्रलेखन की बुक लिखी गयी

३. महंत स्वा.तथा न.वा.यु.मं.द्वारा धोलका देश के गांवो में सत्संग सभा

का आयोजन किया गया ।

४. ६००० जितने व्यसनी को व्यसन से मुक्त किया गया ।

- को.ओ.राकेशभाई

बालवा

अगल बगल के देश गाँवो में १२ घन्टे की धुन नीचे अनुसार हुई (१) बालवा (२) प्रतापपुरा (३) बदपुरा (४) माणेकपुर(५) मकाखाड(६) चांदीसडा (७) गुलाबपुरा (८) उनावा (९) कल्याणपुरा (१०) ईश्वरपुरा ।

- अमृत भाई बालवा

कर्मशक्ति मंदिर

(१) ६० घन्टे की धुन (२) पदयात्रा कर्मशक्ति से अमदावाद मंदिर (३) एकादशी जागरण, प्रति शनिवार को रात्रि सभा, श्री स्वामिनारायण अंक के ६० सभ्य वार्षिक बने ।

- सं. वेकरिया डाह्याभाई

महेसाणा

प्रति एकादशी को मंदिर में रात्रि को ८ से ९ बजे तक सभा का आयोजन । प्रति शनिवार को श्री न.ना.दे.यु.मं. द्वारा मंदिर में सभा । संत मंडळ एवं हरिभक्तो द्वारा गाँव गाँव में सभा का आयोजन ।

कांकरिया

६० दिन तक भिन्न भिन्न स्थलो पर धुन का आयोजन । विशाल सत्संग सभा का मंदिर द्वारा आयोजन, प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री तथा मुख्यमंत्रीश्री के हाथो द्वारा बाल स्वरूप कष्टभंजनदेव चौक का उद्घाटन । स्वामिनारायण बाग में ६० हनुमान चालिसापाठ का आयोजन, कांकरिया मंदिर से अहमदाबाद मंदिर तक, व्यसनमुक्ति, पर्यावरण बचाओ, तथा लकवा दूर करने हेतु प.पू.लालजी महाराजश्री के द्वारा पदयात्रा । श्री न.ना.दे.यु.मं. के सभी सभ्य मूली में वसंत पंचमी के अवशर पर लालजी महाराजश्री के साथ उपस्थित होकर रंगोत्सव का लाभ लिया ।

- को.आ.विशालभाई स. गौरांगभाई

कुकरवाडा

के सन्निकट के सभी गांवो में १२ घन्टे की धुन का आयोजन किया । भिन्न भिन्न गांवो के तथा माणसा मंदिर के महंत संतो के साथ उपस्थित रहे । *- को.ओ.भक्तिभाई कुकरवाडा*

विज्ञप्ति

देश विदेश के सभी प्यारे हरिभक्तो को विशेष रूप से यह बताना है कि पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री की षष्टिपूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में आप लोगोंने जो यजमान के रूपमें सेवा लिखाए है तो पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री आप सभी पर हृदय से प्रसन्न होकर आर्शीवाद दिये है और आप सभी लोग सपरिवार महोत्सव में दिव्यानंद लेने के लिये अवश्य पदार्पण करेंगे । परंतु आपलोगों उत्सव में लिखाई गई सेवा की रकम द्वारा यहाँ पर आने से पूर्व भेजने का कष्ट करेंगे । भेजने की विधि चेक या ड्राफ्ट द्वारा नीचे के पते पर ।

टी. पी. पाण्डेय श्री स्वामिनारायण मंदिर (अमदाबाद ३८०००१) अथवा षष्ठि पूर्ति महोत्सव, श्री स्वामिनारायण मंदिर अहदाबाद - ३८०००१ ।

नोंट : चेंक,ड्राफ्ट अथवा नगदपेमेन्ट (रकम) की पहुंच डांक द्वारा भेंज दी जायेगी ।

- महंत स्वामी

चराडवा मंद्रिर में सुवर्ण कलश तथा ध्वजदंड महोत्सव

भव्य मंदिर सौराष्ट्र कच्छ में आया हुआ विनाशकारी भूकंप में ध्वंश हो गया । मंदिर का पुनः निर्माणकार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि. स.गु. पुरुषोत्तमचरणदासजी की प्रेरणा से तथा लक्ष्मीप्रसाददासजी की प्रेरणा से देश विदेश के हरिभक्तो के सहकार से पूर्ण हुआ है ।

उपरोक्त मंदिर के शिखर पर सुवर्ण कलश तथा ध्वजदंड चढाने का भव्य महोत्सव सं. २०६० माघ कृष्ण ११ ता.१६-२-०४ से फाल्गुन शुक्ल-२ ता.२२-२-०४ तक धूमधाम से मनाया जायेगा ।

॥ मंगल कार्यक्रम ॥

- पोथीयात्रा : ता. १६-२-०४ प्रातः ८ बजे श्री स्वामिनारायणमंदिर से कथा स्थल तक
- कथा का शुभ प्रारंभ : ता. १६-२-०४ प्रातः ९ बजे प.पू.लालजी महाराजश्री के करकमलों से वक्ता पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), महंत स्वामी. घनश्यामप्रकाशदास (नारायणघाट)
- कथा का समय : प्रातः ८-३० से ११-३० तक सायं ३-३० से ६ तक
- अखंड धुन : ता. १६-२-०४ प्रातः ९-३०बजे लालजी महाराज के हाथोसे
- नन्दोत्सव : ता. १९-२-०४ सायं ५ बजे
- श्री हरियाग का शुभारंभ : ता. २०-२-०४ प्रातः ९-१५ बजे
- समूह महापूजा : ता. २१-२-०४ प्रातः ७ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी उपस्थिति में
- रंगोत्सव : ता. २१-२-०४ दोपहर ११ बजे प.पू.लालजी महाराजश्री तथा पू.बाल लालजी के करकमलो से ।
- नगर यात्रा : ता. २१-२-०४ सायं ४ बजे जिसमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवं पू.बाललाल महाराजश्री पधारेंगे ।
- महाअभिषेक : ता. २२-२-०४ प्रातः ५-३० बजे ।
- श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट दर्शन : ता. २२-२-०४ प्रातः ८-३० बजे
- धर्मभक्ति सभामंडप तथा बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा : ता. २२-२-०४ फाल्गुन शुक्ल रतथा प्रातः ९ बजे
- सुवर्ण कलश प्रतिष्ठा तथा ध्वजदंड आरोपण : ता. २२-२-०४ प्रातः १० बजे
- अखंड धुन पूर्णाहुति : ता. २२-२-०४ प्रातः १०-१५ बजे
- कथा पूर्णाहुति : ता. २२-२-०४ प्रातः ११ बजे
- यज्ञ की पूर्णाहुति : ता. २२-२-०४ प्रातः १०-३० बजे
- रात्रि का सांस्कृतिक कार्यक्रम : (महंत स्वामीश्री, स्वामिनारायण मंदिर चराडवा) ता. हलवद जि.सुरेन्द्रनगर
- उत्सवस्थल : श्री स्वामिनारायण संस्कार धाम पराडवा फोन-०२७५-२४०२३, २४०५७१ समय रात्रि ९ बजे जिसमें ख्याति नाम बाल लोक कलाकार तथा हास्य कलाकार उपस्थित रहेगें ।

बाल मंडळ के संचालको को सूचना

गाँवो का बाल मंडल बहुत समय से निरन्तर चल रहा है । बाल मंडल चलानेवाले संत तथा संचालक अपने विस्तार के गांव तथा शहर में चलते हुए बाल मंडल के बालको का नाम, पता, अभ्यास, के साथ सम्पूर्ण परिचय संख्या के साथ संचालक, व्यवस्थापक का नाम पता, फोन. के साथ ता. २५-२-०४ तक नीचे के पते पर भेंजे ।

तेजेन्द्रप्रसादजी एज्युकेशन एण्डरिसर्च फाउन्डेशन (Terf)
ए.इ.सी. के पीछे नारणपुरा अमदावाद ३८००१३
फोन : ७४९१४३१, ७४७९७८३

तमाकु की भेट : अच्छे अच्छो का मुह बंध कर देता रोग
ओरल सबम्युक्स फाईब्रीसीस

डॉ. पी. बी. पटेल

भारत का इतिहास बहुत पुराना है। देश खूब विशाल है । अनेक परदेशी इस देश में आकर रहे इसलिये अत्यंत सांस्कृतिक विभिन्नता देखने को मिलती है ।

इस देश के वातावरण में उत्तर भारत में बारह महिने खूब ठंडी रहती है। और दक्षिण में खूब गरमी पडती है । विश्व में सर्वाधिक वर्षा पूर्व भारत में गीरती है । तो पश्चिम में पानी की कमी रहती है ।

इस देश में बहुत सारे धर्म है । सभी धर्मो में बहुत विभाग है। उसमें भी विभिन्न प्रकार की जातिया है । सभी जाती में छोटे-छोटे गुट है । हरेक का दिखावा, पहनावा, भाषा तथा रहन सहन का तरीका भिन्न है। एक तरफ बहुत सारे सुखी लोग है तो दूसरी तरफ निर्धन मनुष्य भी है।

इतनी सारी भिन्नता के बावजूद भारत में एक विशेषता है कि जो सार्वत्रिक है । तथा वह है पान-गुट्का की दुकान । प्रत्येक गांव में, प्रत्येक बस स्टेन्ड पर, सोसायटीके बाहर, रास्ते पर होटलो में, रेस्टोरेन्ट, पेट्रोल पंप पर अवश्य पान मसाला की दुकान देखने को मिलेगी । वहां कुछ मिले न मिले किन्तु तमाकु तथा पान मिलेगा ही । देश में कही भी जाओ, किसी भी समय जाओ वह सुबह से लेकर शाम तक खुल्ली रहेगी।

घर या बाहर जाने-अंजाने को तमाकु खाने का तथा खिलाने का व्यवहार सामान्य है । व्यापारी, डींग हांकते मित्र, सगे संबंधी के स्वागत में या प्रवास-बर्थडे, रिसेप्शन के सुंदर अवशर या मृत्यु जैसे खराब प्रसंग पर पान-तम्बाकू स्वाभाविक रुप से खीलाते है ।

तम्बाकू के कारण हाथ में पडा दाग, खराब दांत, लाल होठ तथा गाल भारतीय हवा के आधुनिक चिन्ह है । बात करते हुए तमाकु मसलना, दूसरो को देना, गाल या होठ के नीचे तथा मुंह में तमाकु रख बातचीत करना, बीच में खडे रहकर थूंकना जाने आधुनिक युवान तथा सामान्य भारतीय की पहचान बन गयी है । यह इतना स्वाभाविक हो गया है ।

सीढी, गेलेरी, लिफ्ट, दीवाल, संडास तथा शौचालय में पडे दाग हम भारत में है ऐसी प्रतीति कराते है।

यह विशेषता विश्व में पाकिस्तान, बांग्लादेश, भारत के अलावा अन्य देश में देखने को नही मिलती इसलिये परदेश विचित्र लगता है । वहाँ की स्वच्छता को देखते ही रहेते है । यहाँ आकर वहाँ के गुण गाते है और साथ में थूकते भी है ।

अपने राष्ट्रीय विशेषता के कारण हमारे देश में एक नये राष्ट्रीय रोग का निर्माण हो रहा है । जो विश्व में कहीं नहीं है । जिसका नाम ओरल सबम्युक्स फाईब्रोसीस है । इस रोग में मुह पुरा नही खुलता । कभी तो ऐसी परिस्थिति आती है कि दो दांत के बीच पापड भी नही जा पाता ।

ये दु:खदायक रोग बहुत छोटी उम्र में होता है । और उसका कोइ उपचार नही है जिससे इसका संपूर्ण नाश नही हो शकता । इस रोग के साथ होने वाले रोग जैसे की कम भूख लगना । तीखा नही खा पाना और अंत मे केन्सर होना और फिर मरीज कम उम्र मे घुट घुट मरता है।

<u>फायब्रोसीस होने के कारण :-</u>

(१) इस रोग का सबसे बडा कारण पान, सुपारी, तम्बाकू और चूना है। (जिसे हम मुह में रखते है। ऐसे कइ लोग है जो सुबह उठ कर सबसे पहला काम तम्बाकू खाने का और सोने से पहेले भी तम्बाकू खाते है। कुछ लोग तो रात को सोते वक्त मुह में तम्बाकू रख कर सोते है ।)

(२) लोह तत्व की कमी (३) मुह में हरदम होता रोग (४) विटामिन-ए की कमी (५) ओटोइम्युन रोग (६) परंपरा से ।

ओटो इम्युन और परंपरा से ये रोग बहुत कम होता है।

तम्बाकू, पान, सुपारी, चूना इत्यादि मुह में जहाँ रखते है उस जगह वह नुकसान करता है । उसके साथ जो रस जाता है वह मुह, गला, स्वरपेटी, अन्ननली, दिमाग, हृदय (Heart), खून लानेवाली रंग, पांव सभी को नुकसान करता है ।

<u>दुसरी बात भुल कर अभी केवल मुह होनेवाली मुकसान की ही बात करे:-</u>

तम्बाकू, पान, सुपारी, और चूना के कारण बारबार मुह में छाल पडते है । और तीखा खाने में तकलीफ होती है । कई बारतो उनके कारण इतना दर्द होता है की प्रवाही और खाना नही खा पाते ।

भोजन योग्य मात्रा में न लिया जाय तो लोह तत्व, विटामिन और अन्य की कमी होती है । और रोग प्रतिकारक शक्ति कम होने से कईबार मुह के रोग होते है । इस प्रकार रोग का कारण है पान, सुपारी, तम्बाकू और चूना

आज के फैशन युग में स्त्रियां पुरुष के समान होने का प्रयत्न करती है । इसलिये उन लोगो ने भी तम्बाकू खाना शुरु कर दिया है । इसलिये ये रोग स्त्रियो में भी दिखाई देता है ।

तम्बाकू, पान, मसाला, सुपारी और चूना खाने वाले सभी को रोग होता है । पर बहुत लोगो को यह रोग अल्प मात्रा में होता है । इसलिये पता नही चलता रोग का सर्वाधिक शिकार कौन बनता है ?

जैसे कम उम्र मे तमाकु ले तो उन्हे यह रोग होने की संभावना ज्यादा रहती है । जो हररोज ले उसे भी रोग ज्यादा होता है । मसाला खाने के बाद जो मुह नही धोता उसे भी होता है ।

<u>पता कैसे चले:</u> - मानो की आपको व्यसन है और आपको जानना है कि यब रोग शुरु हुआ है की नही वह कैसे जाने ? यह प्रथम प्रश्न होगा ।

यह जानना खूब सरल है, यह आप खुद जान शकते हो ।

सबसे पहले मुह खोल कर हाथ की चार अंगुलि मुह में डालने का प्रयास करे । यदि सभी चली जाय तो रोग नहीं है । तीन अगुंलि जाये तो इस रोग की शुरुवात हो गयी है । यदि दो अंगुली जाय तो आगे बढ चुका है । और एक अंगुलि जाये तो बहुत आगे बढ गया है ।

अब घर के किसी बालक के गाल के अंदर अंगुली घुमावो उसके गाल नरम, कोमल होगे, और देखो गाल खीचने से कितने खिचाते है । और रंग भी देखो ।

और फिर अपने गालके अंदर स्पर्श कर देखो यदि नरमता तथा कोमलता कम हो गयी हो तो आपको भी रोग की शुरुवात हो गयी है । यह गुणधर्म जैसे जैसे घटे वैसे वैसे रोग ज्यादा बढता है ।

आपके गाल के अंदर अंगुली डाल कर खिंच कर देखो । यदि आराम से खिंचाये तो कोइ तकलीफ नही । किन्तु जितना कम खिंचाय तो तकलीफ उतनी ज्यादा होगी । यदि गाल नही खिंचाये तो बहुत ज्यादा तकलीफ है ।

आपको पता नही चले तो बारह-तेरह वर्ष के बच्चे पर यह प्रयोग करके देखे ।

अब हाथ में छोटा सा आइना लेकर घर के बहार जाओ और जहाँ अच्छा प्रकाश हो वहाँ मुह खोल आइने से देखे । गाल के अंदर का रंग कैसा है ? यदि लाल होतो ठीक है । किन्तु जैसे रंग कम हो वैसे तकलीफ ज्यादा है ।

<u>रोग होने से पहले कैसे पता चलेगा :-</u> यदि आपका वजन कम होता जाय, भूख कम लगे, काम में अशक्ति लगे, हिमोग्लोबीन कम रहे तो इस रोग की संभावना बढ जाती है ।

और यदि सामान्य तीखा ज्यादा तीखा लगे तथा मुह में छाला पडता रहे तो ये रोग की शुरुवात है ।

दांत, मसुडोका, और गाल का रंग जहाँ तमाकु रखते है । वहाँ का रंग बदले तो संभालना चाहिये ।

<u>ओरल सबम्युक्स फायब्रोसीस :-</u>

(अ) रोग होने के कारण

- कम उम्र में तम्बाकू, पान,चूना,सुपारी का व्यसन
- तम्बाकू लंबे समय तक मुह में रखने की आदत
- तम्बाकू खाने के बाद मुह साफ न करना
- संपूर्ण पोषण न मिलना
- कम वजन होना
- लोह तत्व की कमी होना
- मुह में हरदम रोग होना
- भूख कम लगना
- मुह मे हरदम छाले पडना
- सामान्य तीखा ज्यादा तीखा लगना ।
- दांत, मसूडे, होठ या गाल पे दाग दिखाई देना

(आ) चिन्ह :-

- मुह खोल पाने की मात्रा चार अंगुलि से कम
- गाल के अंदर के हिस्से की चमक, नाजुकता और नरमपने में घटौती
- गाल के लाल रंग में बदलाव
- गाल खींच पाने की मात्रा में कमी

(इ) आप क्या करे :- आपको स्वाभाविक प्रश्न होगा की इसमें कोइ भी चिन्ह हो तो मुजे क्या करना चाहिये ?

- इनमे से कोई भी चिन्ह हो तो तात्कालिक व्यसन बंध करो ।
- हरी सब्जी, फल ज्यादा मात्रा मे ले।
- हर रोज खाने के बाद ब्रश करना चाहिये ।
- खाते वक्त कुछ नही लेना चाहिये ।
- भोजन में कडक, तीखा, तवा हुवा, गरम और ठंडी चीजो का त्याग करो।

जिन्हे यह रोग के चिन्ह हो तो ऊपर बताये गये तमाम नियम का पालन करना चाहिये । और डॉक्टर को दिखाना चाहिये और हो शके तो केन्सर के डॉक्टर को दिखाना चाहिये ।

शुरुवात के स्टेज में यह रोग इलाज से मिट शकता है । और पीछे के स्टेज में भी इलाज से राहत होती है । किन्तु अंतिम स्टेज में खूब मुश्किल है । और उसके लिये निपुण डॉक्टर की जरुरत पडती है किन्तु बारबार दिखाने जाना पडता है ।

परंतु रोगकी सारवार करना, पैसा खर्चना और परेशान होना इससे अच्छा व्यसन बंद करना क्या गलत है ।

आप व्यसन करते है ? तो क्या सोच रहे हो ! अभी ही बंध कर दो

(ई) <u>रोकने के लिये क्या करे :-</u> आज के डॉक्टरो के लिये प्रश्न बडा विकट है । डॉक्टर के यहा मरीज रोग को न जानने के कारण लेट आते है । जिन्हे रोग का खयाल होता है उन्हे गंभीरता नही होती । और फिर शुरु होता है दु:ख मुश्किल और पश्चाताप।

इस की शुरुवात हाइस्कुल और कोलेजो में होती है । अध्यापक तथा प्रोफेसर और विधार्थी साथ बैठ कर तम्बाकू खाते है । अरे अध्यापक ही कभी छात्र को तम्बाकू लेने भेजते है।

योग्य साहित्य, फोटोग्राफ, ओडियो-विज्युल लेक्चर से यह बात यदि विधार्थीयों को बतायी जाय तो प्रश्न सरल हो जायेगा ।

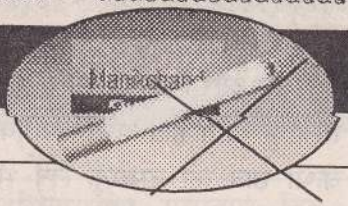
यदि पुस्तको में इस प्रकार के रोगो को लिया जाये तो भावी पीढी की एक बहुत बडी सेवा कहलायेगी। जरुरत बगैर की चीज छात्रो से याद कराने के बजाय उपयोगी चीज जीवन में उतारना जरुरी है ।

बच्चो के मन में यह व्यसनादि धीरे धीरे चूहे की तरह घर बनाने और अंत में घर को एक अंधकार में डुबा दे उससे पहले उन्हे रोकना है ।

यह काम पाठशाला के अभ्यासक्रम बनाने वाले का है, शिक्षापत्री का है । आपका है, मेरा है, हम सब का है ।

(उ) कौन आगे आयेगा :- कोई भी आगे न आये किन्तु आप जरुर आओ । आपके लिये, आपके आत्मसंतोष के लिये आपकी जीवन की सफलता के लिये यह सर्वोत्तम समय है इसे प्राप्त कर ले ।

(ऊ) कब से शुरु करे :- आज जैसी कोई शुभ घडी नही है, आज से अभी से शुरु करे "शुभस्य शीध्रम्" अच्छे कार्य में देरी कैसी !



व्यसन मुक्ति

- प्रो. महादेवभाई धोरियाणि (राजकोट)

राधेशंकर महाराज के "व्यसन" मुक्ति का दो दृष्टांन्त यहां दिया जात्रा रहा है ।

(१) सन् १९४१ में दंगा हुआ उस समय की बात है । तीन दिन तक तूफान चला । उस समय अहमदावाद में चारो तरफ करफ्यू लगा हुआ था । कोई बाहर निकलता नही था । मैं चारो तरफ घूमता था उस समय एक व्यक्ति ने मुझसे कहा, "महाराज ? मेरी जिन्दगी में कभी ऐसा दुःख नहीं आया जो जितना इस समय है । मैं ने पूछा कि क्यों कहीं चोट लग गयी क्या ? तब उसने कहा कि चोट तो नहीं लगी लेकिन तीन दिन हो गया पान ही नहीं खाया ।

ओहो । व्यसन की कैसी पराधीनता, व्यसन का अर्थ ही दुःख होता है । अच्छी वस्तु निस्पृह होती है । जब कि व्यसन तो ताक कर ही खडां रहता है । दूध एकाध दिन न मिले तो चालता है , लेकिन चाय न पीये तो माथा दर्द करता है।

प्रस्तुत दृष्टांत द्वारा "मसाला" "गुटखा" इत्यादि व्यसन वाले विधार्थी तथा युवान लोग कुछ सार ग्रहण करे तो अच्छा रहेगा ।

(२) मेरे पिता के एक मित्र जिनका नाम रणछोडभाई था । जो चिलम के बहुत व्यसनी थे । उनके यहाँ बहुत वर्षो के बाद पुत्र का जन्म हुआ । उनके आनन्द की सीमा न रही । मेरे पिताजी को खुशी का पत्र लिखे । उत्तर में मेरे पिताजी ने उन्हे लिखा ।

आपके यहां पुत्र प्राप्त हुआ यह जानकर बहुत आनन्द हुआ । क्योंकि जब बडा होगा तो आपको चीलम भरकर देगा ।

मेरे पिताजी का पत्र पढकर रणछोडभाई के मनमें हुआ कि क्या मेरा बेटा भी ऐसा ही होगा ? और वे उसी समय चीलम का व्यसन छोड दिये । ऐसा ही त्याग ने का संकल्प होना चाहिए ।

कहना यह है कि "व्यसन आत्मा को मलिन करता है, "सद्‌गुणो को ढंक देता है, और कभी कल्याण होने नहीं देता, इसलिये व्यसन को सदा के लिए छोडकर "व्यसन मुक्ति" का नारा लगाना चाहिए ।

अपनी आवक में कमी आती है इसलिए मेहनत की कमाइ को चाय, कोफी, बीडी, तम्बाकू, गुटखा, पान, सोपारी, इत्यादि व्यसन में नहीं डालना चाहिए मुख की सौख में व्यर्थ का खर्च किसलिए ?

यदि जीवन में सुखी होना चाहते है, शान्ति से जीना चाहते है तो व्यसन तथा मौजसौख के व्यर्थ खर्च सें बचना चाहिए । प्रतिदिन दाल, भात, रोटी, सब्जी, सादा भोजन ही करना चहिए, यह राशन मंहगा नहीं है बल्कि फैशन मंहगा है ।

कौन सी वस्तु उत्पन्न आवश्यक है और कौन आवश्यक नहीं है इसका ज्ञान तो अवश्य होना चाहिए । ऐसा करेंगे तो ही छिद्र भर सकेगा और अपना पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं होगा । अन्यथा बैल की तरह चलते रहेगे और छिद्र से जैसे पीनी निकल जाता है ऐसे ही धन बहता रहेगा ।

सद्‌गुरु गुणातीतानन्द स्वामी के शब्द यहा उल्लेखनीय है कुसंगी के ढोंग में सत्संगी की रोटी । ऐसे कुसंगी के ढोंग में से निकलिये और हिलमिल कर रहिए तो कोइ भी घर भूखा नही रहेगा ।

तमाकु किमाम ने फाकी,
बीडी बजर सौ नारी जाति,
आ पांचेय पंचामृत नही,
ए तो तंदुरस्ती कोरी खाती ।

जीवन में जितना परिग्रह है उतना ही विग्रह है । जिन के लिये खाना जरुरी है । खाने के लिए जीना जरुरी नही । ऐसी समझ आवे तो ही खर्च तथा पाप दोनो घटेगा तथा रोग भी नहीं होगा । निर्व्यसनी निरोगी होकर लंम्बी आयु सुख पूर्वक जीता है । निरोगिता का आधार स्तम्भ मन है । निर्मल चित्त के विना आत्मा की उत्पत्ति तथा शान्ति नही मिलती । निरोगी शरीर में निरोगी मन की वृत्ति को विकृत न करने वाला ही सात्विक आहार है । जो वृत्तियो को बहका कर अजीर्ण करे वही विकृत आहार है।

जो हृदय दे सकता है वह पुत्र भी दे सकता है



- चन्द्रकान्त मो. पाठक (गांन्धीनगर)

त्रिलोकनाथ तथा अनुराधा दोनो बडे सुखी थे । लक्ष्मीजी के कृपा पात्र थे । भौतिक समृद्धि से परिपूर्ण थे । लेकिन सन्तान सुख नही था । इसकी मानसिक पीडा अनुराधा को अधिक थी ।

त्रिलोकनाथ सदाचारी सदगृहस्थ थे । न्याय नीतिवाले थे । ईश्वर में श्रद्धावाले थे । सन्तान के लिये दान, जप, तप, करते रहते थे । यज्ञ, धर्मशाला, कूंआँ, सदाव्रत, दीन दु:खी को दान देना इत्यादि करने के बाद भी सन्तान लाभ नही हो रहा था ।

एकदिन उनके विचार में आया कि किसी बडे सन्त की शरण लें और उनकी सेवा भक्ति से कृपा होगी तो कार्य सुलभ हो जायेगा । सन्तो का भगवान के साथ सम्बन्ध रहता है । धनपति को यह शुद्ध विचार आया और गांव में जो भी सन्यासी, साधु, वैरागी, त्यागी आते उन्हे अपने घर ले आते श्रद्धा से उनकी सेवा करते, भोजन कराते, पूजा करते, उनके उपदेश सुनते इस प्रकार समय बीतने लगा । लेकिन कर्मगति टालने वाला कोई सन्त नहीं आया ।

इतनें में नारायण, नारायण करते हुए नारदजी आ गये । दम्पती के खुशी का कोई सीमा न रही उनकी सेवा पूजा किये पश्चात नारदजी ने पूछा कि तुम्हारे आंगन में बालको की किलकारी नही सुनाई देती क्या कारण है ?

त्रिलोकनाथ नारदजी की तरफ देखे जा रहे थे । प्रभो ! मेरा घर पितृ तर्पण करने वाले से रहित हो जायेगा ऐसा लगता है ।

मुनि अनुराधा की तरफ देखे तो उनके आखों से अश्रु धारा बह रही थी । यह देख नारदजी में कहा देवि ? निराश न हो मैं अभी वैकुंठ लोक ही जा रहा हूं भगवान को आपकी वेदना कहूंगा । नारदजी वैकुंठलोक गये ।

नारदजी को देखकर भगवान प्रसन्न हो गये और कहने लगे किस लोक को पावन करके आ रहे है ? हमारे लायक क्या काम लाये है ।

प्रभो ? आपको काम करने में कहां परिश्रम करना पडता है संकल्प मात्र से पूर्ण होजाता है । मृत्युलोक में से एक परमभक्त के घर से आ रहा हू । लक्ष्मीजी की कृपा से सभी प्रकार से सुखी हैं लेकिन आपकी

कृपा हो जाय तो पुत्र के न होने के दुःख से दूर हो जाय ।

थोडी देर के बाद मौन तोडते हुए प्रभु ने कहा नारद ? मैं निस्माय हूं । उस दम्पती के जीवन में सन्तान सुख नहीं है ।

विदा होकर नारदजी पुनः त्रिलोकनाथ के पास पहुंचे । और संपूर्ण वृत्तान्त सुना दिये । त्रिलोकनाथ ने कहा भगवान की जैसी इच्छा । अपने सन्त सेवा का व्रत चालू रखे ।

एक दिन गाँव में एक संत आये, सुकलकडी शरीर । हाथ में कमंडलुं, अयाचक जीभ में सतत हरिनाम, वृत्ति, जो मिल जाय वही खालेनेका ऐसे संत की श्रद्धा पूर्वक सेवापूजा करके भोजन कराया संत तृत्प हो गये और आशीर्वाद दिये कि भगवान आपको तीन पुत्र दे ।

समय वीतते त्रिलोकनाथ के आंगन में तीन पुत्र खेलने वाले हो गये ।

पुनः नारदजी को एक बार ऐसा हुआ कि श्रेष्ठी का समाचार तो ले और त्रिलोकनाथ के घर आये । आश्चर्य चकित हो गये । तीन पुत्रो के साथ पिता खेल रहे थे । शेठ खडा हो गया । सन्मान किया । प्रणाम करके बैठाया । तीनो पुत्र भी चरण स्पर्श किये । सभी को आशीर्वाद दिये लेकिन मन में समाधान नही हुआ । ऐसा कैसे हो गया ।

मुनिवर की शंका का समाधान करते हुए त्रिलोकनाथ ने कहा वर्षो पहले एक संत आये और प्रसन्न होकर उन्होनें आशीर्वाद दिया कि आपको तीन पुत्र होंगे, तो उन्ही के आशीर्वाद का यह परिणाम है । यह सुनकर नारदजी ठन्ढे पड गये । नारायण । नारायण हे प्रभु आपकी लीला अपरंपार है ऐसा कहकर वैकुठ की तरफ प्रयाण किये । खूब आवेश में बोलते चले जा रहे है आज झगडा होगी मुझे झूठ बोलना पडा इत्यादि ।



लेकिन यहाँ तो आश्चर्य का पारावार नहीं । वातावरण गमगीन है । भगवान के पेट में असह्यपीडा हो रही है । अश्विनी कुमार भांति भांति के उपचार कर रहे है । लक्ष्मीजी पवन डुला रही है, पेट पर हाथ फेर रही है लेकिन कोई आराम नही । अन्त में किसी ने बताया कि कोई आदमी जीते ही अपना कलेजा निकाल कर दे और उससे दवा बनाई जाय तो आराम हो सकता है ।

नारदजी गुस्सा को पीगये और विचार किये कि इस समय यहा कुछ कहने लायक नही है । जीते आदमी का कलेजा यह तो बडा कठिन कार्य है । कौन अपना कलेजा निकाल कर स्वयं देगा । सभी एक दूसरे को देखने लगे । भगवान नारदजी की तरफ कातर भाव से देखे तो नारदजी एकदम ठंढे पड गये ।



महाप्रभु । आप चिन्ता नही करें अभी मैं कलेजा लेकर आता हूं । सब दुःख दूर हो जायेगा । ऐसा कहकर नारदजी वहा से निकल गये

। बहुत दौडधूप किये लेकिन जीवित अपना कलेजा कौन देगा ? निराश हो गये । आते समय एक महात्मा से प्रभु के बिमारी की सभी बाते बता दी और जीवित मनुष्य का कलेजा चाहिए यह भी बताया ।

महात्मा बोले ओहो ? प्रभु धन्य भाग्य है हमारी ! मेरे कलेजे को स्वीकार करना । और आपके दुःख को दूर करने में मेरा कलेजा काम में आयेगा । इस लिये तुरंत ही अपने कलेजे को निकालकर नारदजी को दे दिया । कलेजे को लेकर त्वरित गति से नारदजी भगवान के पास पहुंच गये ।

यहाँ तो वातावरण बदल गया था । आनंद ही आनंद था । भगवान की पीडा तो थोडी कडवास से ही मिट गयी थी । कलेजा अश्विनी कुमार को दे दिये । अब तो उसकी कोई जरुरत नही थी ।

कुछ समय बीत जाने पर भगवान तथा नारदजी शान्ति से बैठे थे उसी समय नारदजी ने भगवान से पूछा, प्रभो ? आपसे एक दम्पती को पुत्र देने की बात की थी और आपने कहा था कि उसके भाग्य में संतान सुख नही है ।

कौन शेठ दम्पती ? हमें कोई याद नही । भगवान बडी गंभीरता से कहाँ ।

याद क्यो नही है ? याद करो नारदजी ने आवाज की मात्रा थोडी बढाई । आपने संतान न होने की बात कही थी वैसेही मैने वो बात उनको कर दी । अभी तो उस गृहस्थ के घर तीन लडके उछल-कूद कर खेल रहे है । आपने मुझे उनके आगे गलत साबित किया है । मै आप पर विश्वास करता हूं वह गलत है ।

मैं ने कीसी को गलत नही बताया है ।

तो फिर ऐसा क्यो हुआ ।

देवर्षि ! जो कलेजा दे शकता है वह पुत्र भी दे शकता है । समझे ?

क्या ! नारदजी चौंक गये ।

हा देवर्षि आप मेरे लिये कलेजा लेने दौडते हुए गये बहुत जगह गये किन्तु अपना कलेजा याद नही आया ?

मेरे संत हरपल मेरा स्मरण करते मुमुक्षुओ के हित के बारे में सोचता है । भूख-प्यास को सहन करते है । मान-अपमान सहन करते है । दुसरो के दुःख दूर करते है । ऐसे संतो के वचन हंमेशा सत्य करता हूं । मेरा वचन मिथ्या हो तो होने दो किन्तु संत का वचन मिथ्या न होना चाहिये ।

नारद ! मेरे संत से अधिक कोई नहीं है । वीणापाणी मुंह झुका कर खडे थे ।

सद् गु. श्री गोपालानंद स्वामी और उनका मंडल प्रवास (यात्रा) के दौरान एक गाव के तालाब के पास कुछ समय विश्राम कर रहे थे । वहा से कुछ दूर चार परदेशी ब्राह्मण रुके थे । उनमे से दो की कालेरा के कारण मृत्यु हो गयी थी । गोपालानंद स्वामी तब पूजा कर रहे थे । इन दोनो विप्र को अक्षरधाम में रखा । स्वामी के मंडल में विज्ञानदासजी नामके सीधे समाधि वाले संत थे । उस साधु को पता चला तो वह बोलने लगा यह अनजान जीवो को साधना के बगैर सीधा अक्षरधाम में रख दिया है । यह स्वामी ने ठीक नही किया है । यह बात मैं महाराज से कहुंगा ।

श्रीजी महाराज से मिलते ही विज्ञानदासजी ने पूरी बात बतायी । और कहा ब्राह्मण तो अनजान थे । भजन-भक्ति भी नही करते थे । सत्संगी भी नही थे । परिचित भी नही थे । स्वामिनारायण का नाम भी नही लेते थे । उन्हे गोपालानंद स्वामी ने अक्षरधाम पहुंचा दिया । यह मेरे समक्ष हुआ है ।

श्रीजी महाराज ने क्या उत्तर दिया ? उन्होने कहा महापुरुष आप जो कहते हो सब अपने स्थान पर योग्य है । किन्तु गोपालानंद स्वामी तो स्वतंत्र है । वे दो जीवों को अक्षरधाम में लाये ये अथवा समग्र ब्रह्मांड के जीवो को ले जाये तो भी हम उन्हे कुछ कह नही शकते ।

विज्ञानदासजी महाराज का मतलब समज गये ।

प्रभु तुम बिन मेरो कौन सहाई ?



- पू.सा. वन्दन प्रकाशदास
गुरु भक्तवत्सलदास (लींबडी)

सौराष्ट्र की शूरवीरता की धरती पर मणावदर गांव है । जो अनेक महामुक्त सन्त तथा भक्तो की जननी है । इस जन्म भूमि पर एक महान संत कवि हुए जिनका नाम श्री मंजुकेशानन्द जिसे निष्कुलानन्द स्वामी ने भक्त चिंतामणि में बडे मुक्त महामति के रुप में वर्णन किये है । एकवार स्वयं प्रकाशनन्द स्वामी माणावदर पधारे थे । उस समय माणावदर के भक्त उनके मंडल में जुड गये । गढपुर आये तब श्री हरि इस नव युवान को देखने के साथ ही प्रसन्न हो गये थे । त्यागवृत्ति वाले इस युवान को श्री हरिने दीक्षा दी और मंजुकेशानन्द ने प्रभुके मनोहर स्वरुप को देखकर तथा उनके उपदेश को उनके चारित्रो का कीर्तन बनाकर समाज को दिया ।

एक समय श्री हरि अहमदाबाद में बिराजमान थे । सभी सन्त भक्तों को लेकर प्रभु साबरमती में स्नान करने गये । नारायणधाट पर आकर सभी सन्त भक्त स्नानार्थ तैयार हो गये । महाराज को घेरकर सभी खडे हो गये । इतने में मंजुकेशानन्द घाट पर से धडाम से कूद गये । सभी के ऊपर पानी का छींटा आया । यह देखकर प्रभु नाराज हुए और मंजुकेशानन्द को बुलाकर कहे आप किसके साधु है ? किसके मंडल में है ? साधु की रीति समझे है यै नही ? साधु का आचरण ऐसा होता है ? ऐसे बडे सन्त, हरि भक्तो की मर्यादा रखनी चाहिए या वही ? एकाएक प्रभु का ऐसा उग्ररुप देखकर स्वामी दुःखी हो गये । महाराज ने कहा, ऐसा व्यवहार करना होतो मेरे साथ बात भी नही करना । उस समय स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा प्रभु ? ये कविराज है । प्रेम में मर्यादा का ख्याल न रहा हो । यह सुनकर महाराज और भी नाराज हुए । कहने लगे - "प्रेम की रीति तथा मर्यादा की रीति में मेल न हो तो ऐसा प्रेम कहलायेगा ? लोग मर्यादा देखते है मेल न हो तो ऐसा प्रेम झूठा कहलायेगा । लोग मर्यादा देखते है प्रेम को नही । इस लिये ऐसा आचरण कभी करना नही। सभी मौन हो गये । स्वामी दुःखी होकर मांफी मांगते हुए मग्न हृदय से कीर्तन बोलने लगे-

प्रभु तम विना मारुं कोण छे ।
तमे जानों छो.. हरि .. हरि
परिवार मां तमे सार छो, संसारना
आधार छो,
मारा प्राण तणा तमे प्राण दो
तमे जाणो छो.. हरि ... हरि
आ लोक मां तमे आप छो,
परलोक मां बाप छो.
जर्वजनात ना प्रतिपाल छो,
तमे जाणो छो.. हरि.. हरि
मारी आस तणी तमे आश छो,
इति फूट कापट थी दूर हो,
मंजु केशानन्द ना नाथ छो,
तमे जाणो छो .. हरि.. हरि..

कीर्तन पूर्ण होते ही स्वामी की आंखे भर आयी । महाराज स्वामी को लिपट गये और उन्हे आशीर्वाद दिये । इस प्रकार स्वामी की अनन्य भक्ति देखकर महाराज प्रसन्न हो गये । कीर्तन गाने तथा सुनने से मन को अलौकिक शान्ति मिलती है ।

एक के साथ शून्य को जोड़ने से कीमत होती है

- गोरधनभाइ वी. सीतापरा (हीरावाडी, बापूनगर)

गोपालानन्द स्वामी, मुक्तानन्द स्वामी, ब्रह्मानन्द स्वामी, नित्यनन्द स्वामी, प्रेमानन्द स्वामी, देवानन्द स्वामी, गुणातीतानन्द स्वामी, आधारानन्द स्वामी, आनंदानन्द स्वामी, अदभुतानन्द स्वामी, इत्यादिक समर्थ सन्तों में से किसका नाम लें और किसका छोड दें । पूज्य तो सभी अग्रगण्य सन्त थे । एक एक में कितना सामर्थ्य था जैसे किसी ने कहा कि बरसात वरसो तो वरसात होने लगे । किसी ने कहा वरसात बन्द हो जा तो बन्द होजाती । किसी संत के संकल्प मात्र से मरा हुआ पशु भी जीवित होजाता था । ग्रहण की गति बदल जाती थी । नि:सन्तान दम्पती के घर बडीं उम्र मे भी सन्तान प्राप्त होती । हिंसक मनुष्य ही नही बल्कि वाघ जैसा हिंसक प्राणी भी अहिंसक बन जाता 'पाप के पहाणवाले पापी भी भक्तराज बन जाते हैं । संतो में उस समय या इस समय सामर्थ्य कहां से आता है, तो सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायण में से आता है । उस समय प्रत्यक्ष और इस समय मूर्ति के स्प में प्रत्यक्ष श्री जी महाराज पावरहाउस हैं । वह पावरहाउस कितना प्रकाशवाला है कितनी शक्तिवाला यह मनुष्य की कल्पना से बाहर की बात है । वह उर्जा स्प्री पावरहाउस जिस संत या हरिभक्त के साथ जितना अधिक जुडा रहेगा वह उतना ही शक्तिशाली होगा । पावर कटा की ट्यूबलाइट या बल्ब बन्द पडजाता है । ट्यूबलाइट या बल्ब स्प्री साधन की क्या कींमत । कीमत तो शक्ति स्त्रोत की है । उस समय मान स्प्री दोष से दो चार सन्त-हरिभक्त श्री हरि से अलग हुए कि निस्तेज हो गये । शास्त्रों में रघुनाथ दास, बालबाई, हरबाई इत्यादि की विमुख के स्प में गणना होती है । पावर हाउस स्प्री १ एक से अलग होते ही शून्य होगये । जो लोग नित्य जुडे रहे वे तथा उनकी कीर्ति सूर्य चंद्रमा की तरह आज भी तप रही है ।

श्रीजी महाराजने सत्संग की व्यावहारिक सत्ता के लिये दो आचार्यो की स्थापना की थी । अहमदावाद तथा वडताल में धर्म देव के वंश में से जिस व्यक्ति पर श्रीजी महाराज की दृष्टि पडे वही व्यक्ति इस पद पर रहकर सत्संग का विकास करते है । श्रीजी द्वारा स्थापित इस पद एवं गद्दी का महत्व है । सत्संग में किसी व्यक्ति का महत्व नहीं है । इस पद पर बिराजमान आचार्य महाराज श्री में श्रीजी महाराज का तेज आता है । इन दोनो स्थानों पर आचार्य श्री के स्प में बिराजमान श्रीजी महाराज के अपर स्वस्प्र ही होते है ।

श्रीजी महाराज ने अपने हाथ से लिखी शिक्षापत्री में मनुष्य मात्र का समान्य धर्म तथा आचार्य, आचार्य पत्नी, गृहस्थ सधवा, विधवा, साधु, ब्रह्मचारी, राजा इत्यादि का अलग अलग धर्म का निस्प्रण किया है । श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित इस मर्यादा मे जो रहता है, उस व्यक्ति के ऊपर- श्रीजी महाराज की अमिय दृष्टि रहती है । जो मर्यादा के बाहर रहकर व्यवहार करते हैं उसके ऊपर से दृष्टि हट जाती है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एकबार कहे कि "हम हो, संत हो, अथवा हरिभक्त हो, सभी को श्री हरि की मर्यादा में रहकर यह व्यवहार करना योग्य है । हम लोग मंन्दिर में प्रदिन गाते है कि "मारी मरजी विना रे, कोइ थी तरणुं न तोडाय, एम मने जाणें जो रे, मारा आश्रित नरनारी" । श्री हरि की इच्छा से ही सब कुछ होता है । उसमें किसी का चलता नही है ।

चित्रकूट में रामभरत का दिव्य मिलन हुआ । दोनों भाइयो नें परस्पर

अनु. पेईज नं. १६ पर

स्वामिनारायण सम्प्रदाय की बहुमूल्यता

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

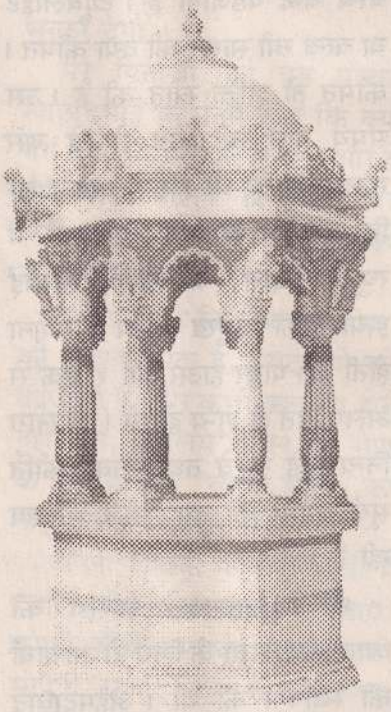
स्वामिनारायण सम्प्रदाय दिन प्रतिदिन देश विदेश में आध्यात्मिक क्षेत्र में मुख्य स्थान प्राप्त करने जा रहा है । गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि दूसरे सभी धर्मो का परित्याग कर एकमात्र मेरी शरणागति स्वीकार कर लो, मै तुम्हे सभी पापों से मुक्त कर दूंगा ऐसी ही अभय वचन श्री स्वामिनारायण भगवान ने भी दिया है -

वनी सौ सांभणो रे, मारी वार्ता परम अनूप,
परमसिद्धान्त छे रे, सहुने हितकारी सुख स्म ॥

आत्यन्तिक मोक्ष का हार्द समझाते हुए सभी को सुख स्म यह सिद्धान्त अति प्रचलित स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य, तथा भक्ति स्म है । सम्पूर्ण सम्प्रदाय का हार्द इस सिद्धांत का आत्यंतिक कल्याण करने हेतु श्री हरि पदार्पण किये है पह बात इस पद से स्पष्ट होती है ।

सहु हरि भक्तने रे, जावुं होय मारे धाम,
तो मने सेवजो रे, तमे शुद्ध भावे थई निष्काम ।

शुद्धस्म में ब्रह्मस्म की भावना करके मात्र प्रभु की प्रसन्नता के निष्काम भक्ति की बात की गयी है। स्वामिनारायण भगवान ने सर्वजीव हितार्थ सरल शैली में धार्मिक सिद्धान्तो का वर्णन किया है । जो दीन लोगों के हृदय में अति सरलता से उतर सकती है । प्रत्येक सिद्धान्त अमूल्य है । इस प्रकार स्वामिनारायण सम्प्रदाय की बहुमूल्यता अजोड है । भूलोक के मानवो को नई दिशा दी



है । भगवान श्री हरि को प्राप्त करने का एकमात्र सरल उपाय आध्यात्मिकता के साथ व्यवहार का भी सरल निस्मण किया है ।

प्रेमलक्षणा भक्त के विषय में - स्त्री-पुस्म जहा एकात्रित होते है वहां अनेक अनिष्ट तथा विकृत्ति पैदा होती है । इसको ध्यान में रखकर भगवान स्वामिनारायण नें स्त्री-पुस्मो की अलग सभा की व्यवस्था की ।

आध्यात्मिकता के साथ व्यवहार का भी सरल निस्मण करके समझाया है । भविष्य में भी स्त्री-पुस्मो की सभा अलग करना ऐसी आज्ञा की । यह एक क्रांतिकारी प्रणाली कही जा सकती है । देवालय मे भी स्त्री-पुस्म एक दूसरे का स्पर्श न करें ऐसी शिक्षापत्री में आज्ञा की ।

समान् में पिछडे वर्गो को भक्ति भजन करने का अधिकार दिया । इसी लिए इस सम्प्रदाय के संस्थापक श्री सहजानन्द स्वामी अधमोद्धारक माने जाते है सम्प्रदाय के मंदिरो में गणपति, शिव, पार्वती, विष्णु, सूर्य, इन पांच देवो का स्थापन अवश्य देखने को मिलता है । जूनागढ के शिखरबध्ध मंदिर में महादेवजी का श्री हरि के समय से अभी तक पूजन-अर्चन होता है । राम नवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्री वामन जयंती, गणेश चतुर्थी, हनुमान जयंती इत्यादि व्रत के उत्सव भी किये जाते है । सत्संगियो को शिवालय या देवालय रास्ते में आये तो आदरपूर्वक नमस्कार करने की आज्ञा श्रीहरि ने दी है ।

नशे मे चोबीसो घंटे चकचूर रहेनेवाले नशाखोरो को भगवान स्वामिनारायण ने मात्र धर्मोपदेश द्वारा सदाचार के आचरण से निव्यसनी बना दिया और समाज का बडे

पैमाने पर नव संस्करण किया है । सर्व साधना के फल स्वस्म प्रगति का कारण सत्संग है । सत्यस्वस्म आत्मा तथा परमात्मा, सत्पुस्म तथा सत्शास्त्रा इन चारो का संग यानि सत्संग और जो इनका संग करे वेही सत्संगी । मनुष्य के सुख दुःख के आठ हेतु-देश, काल, कर्म, क्रिया, मंत्र, ध्यान, दीक्षा तथा संग । इसमें संग विशेष है । स्वामिनारायण संप्रदाय को भी सत्संग समाज कहा जाता है । देव, मंदिर, आचार्य, त्यागी, गृहस्थ इन सभी का धर्म के कारण बना हुआ सत्संग समाज है । और यह सत्संग समाज, उसके नियम, निश्चय अन्य से भिन्न है ।

संप्रदाय के सत्शास्त्रो में संस्कृत भाषा में निर्मित शिक्षापत्री तथा सत्संगी जीवन मुख्य है । गुजराती में वचनामृत मुख्य है । सत्संगी को मात्र धर्म के पंचवर्तमान पालने पडते है । वर्तमान अर्थात वर्तन का नियम । शिक्षापत्री में धर्मकी व्याख्या देते हुए स्वामिनारायण भगवान ने कहा है की "श्रुति, स्मृति द्वारा प्रतिपादित सदाचार को धर्म समझना" किसी भी विद्वान शिष्ट पुस्म द्वारा किया गया अधर्माचरण किया हो तो उसे ग्रहण नही करना चाहिए उनके द्वारा किये गये धर्मआचरण कोही ग्रहण करना ।

जीव, माया, ईश्वर इन तीन स्वस्म को अच्छी तरह जानना उसे ज्ञान कहते है । ऐसा श्री हरि ने कहा है । जब कि भक्ति के बारे में कहा है कि प्रकट परमेश्वर के लिये महात्म्य ज्ञान के साथ अति स्नेह तथा श्री कृष्ण के सिवा अन्य मे प्रीति न हो एसा वैराग्य समजाना ।

अपने आपको ब्रह्मस्वस्म समझ जीवात्मा साकार परब्रह्म की प्रत्यक्ष उपासना करते है । तब उसकी शरीर स्वस्मी माया नष्ट हो जाती है । और उसका जीवात्मा मुक्त हो जाता है । तथा परमब्रह्म परमात्मा को प्राप्त करता है । और फिर वह परमब्रह्म परमात्मा की सेवा करता है । इस प्रकार अक्षरब्रह्म भी साकार है । जिस प्रकार मुक्त आत्मा भागवती दीक्षा धारण कर साकार बनता है । अक्षरधाम में स्वामी सेवक भाव से भक्ति करना यानि मुक्ति या मोक्ष कहा जाता है । इस प्रकार संप्रदाय की बहुमूल्यता अद्भुद है ।

अनु. पेईज नं. १४ से चालु

एक के साथ शून्य को जोड़ने से कीमत होती है

भेंटा, उसी तरह अहमदावाद मंन्दिर की प्रसादी की सभा मंडप श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति.

प.पू.ध.धु. आचर्य महाराज १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसाद जी महाराजश्री तथा लक्ष्मीनारायणदेव पीठधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराज श्री का दिव्य मिलन हुआ । दोनों परस्पर भेंटे, जिसका अन्तः करण निष्पाप था, निर्मल था, वे इस दृश्य को देखकर आनन्दित हो गये ।

पुनः वडताल में लक्ष्मीनारायण देव के १७९ वर्ष वें पाटोत्सव प्रसंग पर दोनो गादी के आचार्य श्री का दिव्य मिलन हुआ । वडताल गादी के आचार्य प.पू.ध.धु. श्री राकेशप्रसादजी महाराज श्री ने अहमदावाद गादी के आचार्य बडे भाई के समान प.पू.ध.धु. श्री तेजेन्द्र प्रसादजी महाराज श्री को गुलाब की सुन्दर माला पहनाकर अभिवादन किया । दोनों आचार्य महाराज श्री ने वडताल के श्री हरि कृष्ण महाराज, के समक्ष सत्संग प्रचार, एकता, सत्संग को एक करने की प्रार्थना की । यह प्रार्थना हरिकृष्ण महाराज ने सुनी है, सत्संग के लिए यह सुवर्ण काल है ।

सत्संग में और भी आगे सुवर्ण अवशर प्राप्त करना हो, इस लोक में विद्यमान आचार्य श्री के साथ सम्बन्ध रखकर श्रीजी महाराज को प्रसन्न कर लेना चाहिए । सूर्य तथा चन्द्रमा की करह तेज में तारा स्प बनकर टिमटिमाते हुए आकाशस्मी सत्संग की शोभा में अभिवृद्धि करे यही श्रीजी महाराज के चरणो में प्रार्थना ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

शिक्षापत्री महात्म्य

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

प्यारे हरिभक्तो ! क्या आपको अपना जन्मदिन याद है ? हां वह तो पता ही होगा । और कोई आपको उपहार दे तो कितना अच्छा लगेगा । और जिसका जन्मदिन हो उसे कुछ भेट देनी चाहिये । बोलो दोगे ! तो आपको याद होगा वसंत पंचमी को शिक्षपत्री का जन्मदिन है । तो शिक्षापत्री के जन्मदिन पर भेट देने से पूर्व इतना पढ ले ।

(१) समय का बहाव कभी समान नही होता है । नदी के बहाव की तरह समय अपना बहाव बदलता रहता है । समय के साथ समाज भी गति करता है । इसलिये समय के साथ सामाजिक मूल्य भी बदलाता रहता है । समाजके मुमुक्षुवर्ग को अपने मोक्ष के लिये त्याग, संयम, भक्ति उपासना इत्यादि दिव्य. सदगुण प्राप्त करने के लिये या हृदय में रखने के लिये एक दिव्य बल की जरुरत पडती है ।

(२) उस दिव्य बल के स्त्रोक देने के लिये परामात्मा प्रत्येक युग में भिन्न-भिन्न अवतार लेते है । अभी के विलाश-वैभव की मायाजाल में मुमुक्षु फंसे उससे पहेले वि.सं.१८३७ चैत-नवमी को छपैया में परब्रह्म परमात्मा स्वामिनारायण के नाम से प्रकट हुए । ग्यारह वर्ष की उम्र में प्रभु ने गृहत्याग कर एक विशाल संत मंडली बनायी । गांव गांव में घूम कर प्रत्येक क्षेत्र में नयी चेतना का संचार किया था । सामाजिक स्म से पीछडी प्रजाको आगे लाया था । और मुमुक्षु जीवात्माओका कल्याण करने के लिये कई उपाय बनाये । उसमें सर्व प्रथम अहमदाबाद में तीन शिखर का मनोरम्य सुंदर महा मंदिर बनाके सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने हाथो से स्वस्वस्म श्री नरनारायण देव की स्थापना की । रचना भी खुद की थी । फिर गुजरात में दूसरे आठ मंदिरो की रचना खुद करवाई । संप्रदाय को सुव्यवस्थित रखने के लिये धर्मकुल में से आचार्यपद की संस्थापना की और मुमुक्षुओ के धर्म-ज्ञान इत्यादि के लिये शास्त्रो की रचना की । जिसमें सत्संगि जीवन, सत्संगीभूषण, वचनामृत मुख्य है।

(३) फिर सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायणने जीव-प्राणी मात्र के मोक्ष के लिये शिक्षापत्री की रचना की । वि.स. १८८२ की वसंत पंचमी को परमात्मा द्वारा लिखित दिव्य चीज है । शिक्षापत्री की समानता एक ऐसी सीढी से कर शकते है । यह बात काल्पनिक नही है, वास्तविक है । जैसे की "यहा थूंकना नही, यहा पर शोच करना नही" ऐसी साधारण सूचनाओ से प्रारंभ कर संसार में आर्थिक तथा सामाजिक व्यवहार कैसे करना उसके बाद धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति का निर्देश भी शिक्षापत्री में किया गया है। और साथ में मोक्ष तक की आध्यात्मिक आज्ञा को भी समन्वय किया है । अर्थात शिक्षापत्री गीता की तरह आध्यात्मिक ग्रंथ ही नही है । वह तो व्यवहार शास्त्र, समाजशास्त्र, राज्यशास्त्र, आरोग्यशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा आध्यात्मिक शास्त्र भी है । इस लिये शिक्षापत्री प्रजा से लेकर प्रधान तक, गरीब से लेकर धनिक तक, अनपढ से लेकर विद्वान तक समाज के प्रत्येक वर्ग को एक समान उपयोगी है । शिक्षापत्री की महिमा के बारे में हम बहुत लिख शकते है । और भगवान स्वामिनारायण ने खुद लिखा है कि "मद्स्ममिति मद्वाणी" अर्थात "यह शिक्षापत्री मेरा स्वस्म ही है ।

(४) इसलिये शिक्षापत्री की आज्ञाओको शिक्षण द्वारा अथवा अन्य किसी भी माध्यम से प्रचार किया जाये तो समाज की कई मुश्किल दूर हो जाये । क्योकि किसी भी धर्म के प्रति शिक्षापत्री की दृष्टि समान है । "इस में शिवजी और नारायण और शक्ति स्वस्म को पूज्य गिना है । और चलते हुऐ शिवालय कोई भी देव मंदिर आये तो आदरपूर्वक देव का दर्शन करना" ऐसा परधर्म सहिष्णुता से भरा हुआ वाक्य शिक्षापत्री के अलावा कही नही मिलता । अर्थात मुश्किल है ।

तो बतावो मित्रो, ऐसी दिव्य पवित्र शिक्षापत्री के जन्मदिन पर भगवानने शिक्षापत्री में कहा है कि इसका प्रत्येक दिन पाठ करना और इसके नियम का पालन करना । तो शिक्षापत्री के जन्मदिवस से ही दृढ प्रतिज्ञा करनी है । इतना याद रखेंगे तो स्वामिनारायण के आशिर्वाद से सुखी बनेगें ।

सत्संग समाचार

षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में कांकरिया मंदिर से अहमदाबाद मंदिर तक संकल्प रैली

सर्वोपरि श्री हरि ने अहमदाबाद में संप्रदायका सर्व प्रथम मंदिर का निर्माण करवा कर कांकरिया तलाब पर ब्राह्मणो को दान दक्षिणा दी थी । इस दिव्य लौकिक भूमि पर प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने बाल स्वरूप कष्टभंजन देव की प्रतिष्ठा कर स्थापना की तब से आज तक यह दिव्य तीर्थ भूमि की महिमा उत्तरोत्तर बढती जा रही है ।

यहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.लालजी महाराज के शुभ उपस्थिति में दि. ४-१-०३ को महंत शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी की प्रेरणा से कांकरिया मंदिर से अहमदाबाद मंदिक तक विशाल संकल्प रैली का आयोजन किया था । जिसमें व्यसन मुक्ति, पर्यावरण तथा पोलियो दिवस के उपलक्ष्य में आयोजन किया गया था । इस संकल्प रैली में प्रत्येक धाम के संत-महंत जुडे थे । जिसमें अहमदाबाद मंदिर के पू.महंत स्वामी, जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी, घोलका, बद्रिनारायण मूली मंदिर के महंतस्वामी, शोकली गुरुकुल और अहमदाबाद मंदिर से राजुस्वामी और अनेक संत रैली में शामिल हुए थे । मणिनगर और कांकरिया विस्तार के सत्संगी भाई बहन हजारो की संख्या में जुडे थे । रैली में अनेक सुशोभित गाडी, बेन्डबाजा की मधुर सुरावली ने एक अद्‌भुद आकर्षण बनाया था । इस रैली का आयोजन तथा व्यवस्था आनंदप्रसाददासजी और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (कांकरिया) ने खूब श्रद्धाभावना से पुरुषार्थ कर उसका प्रचार पसार किया था । गाडियो को सजाने की सेवा पा. नरोत्तम भगत तथा श्री जिज्ञेश पटेल ने की थी । रास्ते में सभी जगह पर रैली का स्वागत किया गया था । जब रैली रायपुर दरवाजा पहुंची तब अंबिका ट्रेडर्स वाले प.भ.कमलेशभाई मोदीने विविध प्रकार के पटाके फोड कर संकल्प रैली का विजय घोष किया था । रैली में उत्साही हरिभक्त चोकलेट-मीठाई का प्रसाद खुशी - खुशी बाँट रहे थे और 'जय श्री स्वामिनारायण के नारे लगा रहे थे । जब यह रैली अहमदाबाद मंदिर के प्रांगण में पहुंची तब वातावरण अति दिव्य लग रहा था । प.पू.लालजी महाराजकी उपस्थिति में रास और धून का आयोजन हुआ था । रैली में जुडे सभी हरिभक्त को प्रसाद की व्यवस्था अहमदाबाद मंदिर के महंत के आज्ञा से हुई थी ।- *गौरांगभाई -श्री नरनारायण देव युवक मंडल*

कर्म शक्ति नया नरोडा मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में कर्मशक्ति श्री नरनारायण देव युवक मंडल और समाज के आयोजन से दि.२६-१२-०३ को यहाँ पर समूह महापूजा का आयोजन हुआ था । स्वामीश्री घनश्यामप्रकाशदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने महापूजा करवायी थी ।

दि. २२-१२-०३ को कर्मशक्ति नगर से अहमदाबाद मंदिर तक दिव्य पदयात्रा का आयोजन किया था । इस अवसर पर बडी संख्या में हरिभक्तो ने उपस्थित रह कर श्रीहरि को राजी किया था और महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया था । *- गोरधनभाई सीतापरा*

ऐप्रोच (बापुनगर) मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में बापुनगर अप्रोच और हर्षद कोलोनी श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और सत्संग समाज के आयोजन से स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी और सत्यस्वरूप-दासजी की प्रेरणा से दि. ११-१-०४ को सुबह ५-१५ बजे एप्रोच और हर्षद कोलोनी दोनो मंदिर से अहमदाबाद तक की भव्य पदयात्रा का आयोजन किया गया था । एप्रोच मंदिर के श्री व्रजेन्द्र बेन्ड की सुमधुर सुरावली के साथ धुनि-कीर्तन करते हुवे सुबह ६-४५ को अहमदाबाद मंदिर की श्रृंगार आरती का दर्शन कर आचार्य महाराजश्री का आशीवाद प्राप्त किया था ।

रात को ८ से ११ एप्रोच मंदिर में प.पू.लालजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । सभा में पू.महंत स्वामीश्री निर्गुणदासजी, को.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी, शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी ने प्रवचन कर षष्ठि पूर्ति के बारे में जानकारी दी । और अंत में प.पू.लालजी महाराजश्री ने आशीर्वचन दिया था । *- गोरधनभाई सीतापरा*

प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में मंदिर में हुए धार्मिक कार्यक्रम राणीप मंदिर में होमात्मक महापूजा

एक वर्ष से मंदिर में उत्सव के उपलक्ष्य में धुनि, कीर्तन पारायण और महापूजा की जा रही है । अभी ६० जितने हरिभक्तो ने रु. १००० भरकर यजमान बनकर सुंदर लाभ लिया था । और प्राप्त रकममंदिर में जमा करवाई गयी । सुबह ७ बजे श्री रमेशभाई शुक्ल नें विधि करायी थी । शाम को ६ बजे महाराजश्री ने पधार कर पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । रात को भव्य सत्संग सभा का आयोजन हुआ था । समग्र आयोजन पू. पी.पी. स्वामी ने (कोटेश्वर) किया था । इस प्रसंग पर पू. गवैया स्वामी तथा छपैया के भूतपूर्व महंत उपस्थित रहे थे ।

-श्री नरनारायणदेव युवक मंडल राणीप

हिंमतनगर

यहाँ मंदिर के महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा हरिभक्तो ने आगमी उत्सव के उपलक्ष्य में धनुर्मास की विशेष धून का आयोजन किया था। और साथ में ६ मंदिरो की पदयात्रा का भी आयोजन किया गया था। दि. १७-१-०४ को हिंमतनगर, प्रांतीज, टोरडा पदयात्रा में बडी संख्या में हरिभक्त स्वामिनारायण महामंत्र के साथ 'टोरडा' पहुंचे तब वहाँ के महंत स्वा. कृष्णप्रसाददासजी ने सुंदर व्यवस्था की अन्य गाँवो की पदयात्रा का आयोजन जल्द ही होगा। टोरडा की पदयात्रा में ईश्वरभाई पशाभाई पटेल तथा नाथाभाई वजाभाई पटेलने पदयात्रियो के लिये महाप्रसाद की व्यवस्था की थी। रास्ते के गांव में रहते हरिभक्तो ने भी सुंदर व्यवस्था की थी। *-मनुभाई पटेल*

धोलका मंदिर

यहाँ प.पू.लालजी महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वा.जगतप्रकाशदासजी और म.स्वा. विष्णुप्रसाददासजी और संत मंडल ने धोलका के हरिभक्तो ने समग्र धनुर्मास पर्यन्त धुनि कर यहा दिव्य वातावरण बनाया था। यहाँ के दोनो महंतो और हरिभक्तो द्वारा प्रत्येक गांव में और रविवार को धोलका में सत्संग सभा की गयी थी। षष्ठि पूर्ति के अवसर पर धोलका शहर तथा गांव के हरिभक्त उत्सव में अपना आर्थिक सहयोग दे रहे है। अपने प्राण से प्यारे धर्मगुरुके लिये प्रत्येक संत हरिभक्त तन-मन-धन से सेवा करना चाहते है। *-श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, धोलका*

इडर मंदिर

यहाँ श्री हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में मंदिर में धनुर्मास में संत-हरिभक्त द्वारा धुनि की गयी थी। औरइसके अलावा महंत स्वा जगदीशप्रसाददासजी संत-मंडल के साथ लालोडा, सांपावाडा, मणीयोर, अरोडा, उमेदगढ और साचोदर में सत्संग सभा में षष्ठि पूर्ति महोंत्सव की स्मरेखा बतायी। उमेदगढ और अरोडा में शकोत्सव मनाया गया। *- स्वामी सत्यसंकल्पदास*

कनीपुर में प.पू. लालजी महाराजश्री का पदार्पण

यहाँ पर भावि आचार्य प.पू.लालजी महाराजश्री को प्रशन्न करने के लिये ८० जितने घरो में दिव्य चरण रख घरो को पावन किया। रात को सत्संग सभा में कीर्तन भक्ति के साथ षष्ठि पूर्ति महोत्सव के लिये फंड एकत्रित किया।

इस अवशर पर पी.पी. स्वामी (कोटेश्वर), छपैया के पूर्व महंत हरिकृष्णदासजी और स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी ने गांव के हरिभक्तो को सेवा की प्रेरणा दी थी। तकरीब एक लाख स्मये इकठ्ठा हुए थे। अंत में पू.लालजी महाराजने सबको आशीर्वाद दीये थे। *- गिरीशभाई पटेल*

चलोडा (जीतबाना)

षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में यहां जेतलपुर अक्षर महोलवाडी के विद्यार्थी संत-बटुक, संचालक हरिओम स्वामी धनुर्मास पर पधार कर धून की थी। चलोडा मंदिर में एक सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें छोटे विधार्थियों ने प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव की स्मरेखा तथा धर्म-भक्ति, ज्ञान, वैराग्य की बात बतायी थी। फिर हरिभक्तो के यहा हरिकृष्ण महाराज के साथ धून-कीर्तन। और फिर शाकोत्सव का आयोजन किया गया था। और इस दौरान संत-बटुको ने सुंदर श्री हरि लीला चरित्र और हरिओम-स्वामी ने सुंदर उपदेशात्मक बात की थी प.भ.जयंतीभाई पटेल ने और हरिभक्तो ने सुंदर आयोजन किया था। *- जयंती भाई पटेल*

बावला

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में भावी आचार्य प.पू.लालजी महाराज की आज्ञा से नजदीक के १० गांव में श्री नरनारायणदेल युवक मंडल और घनश्याम मंडल द्वारा १२ घंटे की धून का आयोजन २०-१-०४ को किया गया था।

धनुर्मास में धून और उत्तरायण को रैली निकाली जिसको सुंदर प्रतिभाव मिला था। बाल घनश्याम संस्कार मंडल के बालको ने ध्यान, योग, प्राणायाम और घनश्याम लीला चरित्र पर नाटक धुन-भजन कीर्तन किया गया था। *- मंत्री, श्री न.ना.देव. युवक मंडल बालवा*

मकारवाड

यहाँ पर धनुर्मास में पू.महाराजश्री और पू.लालजी महाराजश्री की आज्ञा से मूली के स्वामी देवप्रसाददासजी की प्रेरणा से धनुर्मास में प्रातः ५०० जितने हरिभक्त श्री स्वामिनारायण धुन का दिव्यलाभ लेकर धन्य बने थे। *- श्री न.ना.देव युवक मंडल*

नीचे के मंदिरो में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में पू.लालजी महाराजश्री की आज्ञा से अनेक कार्यक्रम हो ते है। जिसमें जाडे में विशेष स्म से शाकोत्सव का आयोजन भी होता है। नारायणघाट मंदिर में महंत शा.स्वा.घनश्यामप्रसाददासजी की प्रेरणा से दि.११-१-०४ को प.पू.ध.धु आचार्य महाराजश्री के करकमलो से भव्य शाकोत्सव हुवा था। जिसमें तकरीबन २३,४०० श्रध्धालु भक्तजन दिव्य प्रसाद प्राप्त कर धन्य हुए। स.गु.देवस्वामी (दिल्ही महंत) की प्रेरणा से श्री न.ना.देव युवक मंडल ने श्रध्धा भक्ति से सेवा की। *- धर्मकिशोर*

जयपुर (राजस्थान) मंदिर

यहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

और लालजी महाराजश्री की आशीर्वादत्मक-आज्ञा से और पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से नये महंत देवस्वरूपदासजी और मेतपुर (खंभात) के हरिभक्त मिल कर सत्संग की सुंदर प्रवृति कर रहे है। जयपुर मंदिर और सत्संग के लिये उपयोगी और अपने संप्रदाय के लिये भावना रखने वाले राजस्थान भाजप सरकार में बहुमती से जीतने वाले श्री गुलाबचंदजी कटारीया (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) श्री घनश्याम, तिवारी (शिक्षण मंत्री), श्री मोहनलाल गुप्ता (विधायक) श्री काली चरण शराप (विधायक) श्री विरुसिंहजी राठोड, श्री सुरेन्द्र पारेख का सन्मान किया गया। प.पू.ध.धु आचार्य महाराजश्री के आर्शीवाद पत्र के साथ संतो ने फूल-हार पहना कर सन्मान किया था। और जयपुर के महंत देव स्वामी आदि संतोने उनके विजय के लिये आर्शीवाद दिये। आमंत्रित समस्त महानुभाव महाराजश्री के आशीर्वाद पढ कर भाव विभोर हो गये थे। यहाँ पर अनेक हरिभक्त उपस्थित रहे थे। सभा संचालन ईश्वर चरणदासजी ने किया था। *-आनंद स्वामी*

जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर

प.पू.लालजी महाराज की शुभ उपस्थिति में दि.४-१-०४ को शाकोत्सव के अवसर पर पूज्य पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने कथामृत का अलौकिक लाभ हजारो भक्तो को देकर कथा-भजन से तृप्त किये थे। सभा संचालन शा.स्वा. घनश्यामप्रकाश-दासजी (नारायणघाट) ने किया था। तत्पश्चात ७ हजार हरिभक्तो ने दर्शन किये थे।

- शा.स्वा. विजयप्रकाशदासजी

साणंद मंदिर

यहाँ प.पू. लालजी महाराज की आज्ञा से षष्ठि पूर्ति के उपलक्ष्य में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा शाकोत्सव आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर महंत स्वामी नरेन्द्रप्रसाददासजी (चराडवा) पुराणी स्वा.हरिकृष्णदासजी ने कथा वार्ता कर सुंदर लाभ दिया था। हास्य कलाकार श्री धवल चोक्सी ने षष्ठि पूर्ति महोत्सव की रूपरेखा समजायी थी।

- श्री न.ना.देव युवक मंडल

सरढव

यहाँ पर मंदिर का अमृत महोत्सव दि. १७-१२-०३ को प.पू.ध.धु.आचार्य महाराज के कर कमलो से संपन्न हुआ। गांव में निकली भव्य यात्रा में सबको दर्शन देकर फिर ठाकुरजी की आरती उतारकर प्रासंगिक सभा में पू.महाराजश्री पधारे थे। हरिभक्तो ने पूजन अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किया था। पू. स्वा. परमेश्वरदासजी और टोरडा महंत स्वा. कृष्णप्रसादासजी ने प्रेरणात्मक सेवा दी थी। *-शा. स्वा. छपैयाप्रसादजी*

घनश्याम महाराज का पाटोत्सव

प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री तथा भावी आचार्य श्री लालजी महाराजश्री की आर्शीवादात्मक आज्ञा से और शा.स्वा.परमेश्वरदासजी की प्रेरणा से अ.नि.प.भ. भौमादास परिवार के पटेल अमरशीभाई, वासुदेवभाई, रणछोडभाई की तरफ से अहमदाबाद मंदिर के घनश्याम महाराज का ११८ वर्ष पाटोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्रीके करकमलो से वेद विधि पूर्वक संपन्न हुवा महंत स्वामी कृष्णप्रसाददास स्वा. भक्तिवल्लभदास और स्वामी वासुदेवचरणदासजी ने इस अवसर पर सुंदर सेवा की थी।

- नाथाभगत

डेमाई (साबरकांठा)

यहाँ पर समग्र मास पर्यन्त स्वामी आनंदस्वरूपदासजी के उपलक्ष्य में रोज सुबह ४-३० को प्रभात फेरी गाव में स्वामिनारायण धुन के मधुरनाद के साथ फिरती है। *- पटेल डाह्याभाई धनाभाई*

राजस्थान के गांवो में षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में ६० घंटे की धुन का आयोजन किया गया था

प.पू.लालजी महाराजश्री की आज्ञा से राजस्थान में देवका गोलिया में दि.१८-१-०४ से २१-१-०४ पर्यन्त ६० घंटे की धुन की गई थी। इसके अलावा दांतीया जेलातरा और वापा में भी हरिभक्ति के साथ मिल कर ६० घंटे की धुन कर अपने प्राण प्यारे प.पू.आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव को सफल बनाने की प्रार्थना की थी।

- जेठाभाई रणछोडभाई

टोरडा मंदिर का ५१ वां पाटोत्सव हुआ

टोरडा धाम का ५१ वां पाटोत्सव मनाने के लिये प.पू. आचार्य महाराजश्री ने शुभ आशीर्वाद दिया थे। प.पू.लालजी महाराजश्री ने उपस्थित होकर हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक तथा अन्नकुट की आरती उतारी थी। महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री दिनेशभाई हेमाभाई पटेल (वेलाल) उत्सव का यजमान बने थे। पू.लालजी महाराजने उन्हे हार पहना कर आशीर्वाद दिये था। प्रासंगिक सभा में पधारे हुए संतोने आर्शीवाद दिये थे अंत में पू.लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये थे। तथा गोपालानंद स्वामी के सिंहासन में ८ किलो चांदी की सेवा देनेवाले पटेल कांतिभाई कचराभाई (मोखासण) को हार पहनाया था। सभा संचालन म.आनंद स्वामी ने किया था। स.गु.गोपालानंद स्वामी की जन्मभूमी टोरडा में श्री भीखाभाई त्रिकमदास पटेल (मोखासण) तथा प्रज्ञेश महेन्द्रकुमार (राजपुर) ने चांदी के द्वार की विशेष सेवा की थी। *- शा. हरिजीवन स्वामी*

उझां

यहा षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से दि. ६-१-०४ से १२-१-०४ पर्यन्त शा.स्वा. सिध्धेश्वरदास (सिध्धपुर गुरुकुल) और शा.स्वा.हरिप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर श्रीमद भागवत पारायण अ.नि.प.भ. अंबालाल शंभुदास तरांगडी परिवार के चि.श्री सुरेशभाई, श्री अरविंदभाई, श्री कांतिभाई (लंडन) ने कथा का दिव्य लाभ प्राप्त किया था। पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू.आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उनके करकमलो से कथा की पूर्णाहुती हुई। - *वसंतभाई*

षष्ठि पूर्ति के उपलक्ष्य में मूली में महारक्तदान शिबिर

झालावाड के हार्द समान मूली स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.लालजी महाराजकी शुभ आज्ञा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में वसंत पंचमी के २६-१-०४ को सुबह ७ बजे दीप प्रकटा कर रक्तदान शिबिर उद्धाटन किया था। जिसमें १०८ हरिभक्तो ने अपना किंमती, नारायणघाट, वहेलाल. निकोल ध्रागंध्रा और सुरेन्द्रनगर इत्यादि से मिल कर कुल ३००८ बोटल रक्तदान किया गया था। गत वर्ष में ब्लड बैंक की तरफ से अहमदाबाद मंदिर को एवोर्ड मिला था। स्वामिनारायण बाग पर स्वयं लालजी महाराजश्री ने और संतो ने रक्तदान की प्रेरणा दी थी। रमेशभाई परीख तथा उनके साथियो ने उत्तम सेवा प्रदान की थी।

- *डॉ.भाविन परीख*

वडनगर श्री सहजानंद गुरुकुल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा महंत स्वामी हरिसेवादासजी की प्रेरणा से तथा शा.स्वा.विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से दि.२०-१-०४ को सुंदर शाकोत्सव का आयोजन किया गया था। प्रासंगिक सभा में शा. स्वा. नारायणवल्लभदासने शाकोत्सव की महिमा तथा श्रीजी महाराज की लीला बताई थी। मुख्यमंत्री के बडे भाई श्री सोमाभाई मोदी,नायब कलेक्टर श्री, विसनगर तथा वडनगर के जज ने भी सुंदर बात बतायी थी। प.भ.नविनभाई मोदी ने भी सुंदर बाते कर सबको प्रसंन्न किया। बहनो की सेवा भी प्रशंसा पात्र थी। *-शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी*

माणेकपुर (चौधरी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराज के आज्ञा आशीर्वाद से तथा शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदास (हाथीजण) की प्रेरणा से षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में यहा पर शाकोत्सव का आयोजन किया था। इस शाकोत्सव का लाभ ५००० हरिभक्तो ने लिया था और महाप्रसाद ग्रहण किया था। तथा श्रीजी स्वामी की प्रेरणा से चौधरी सत्संग समाज ने षष्ठि पूर्ति महोत्सव के लिये २,६०,००० रुपये की सेवा की थी। शाकोत्सव में कालुपुर से शा.स्वा.हरिकृष्णदासजी, पी.पी.स्वामी (कोटेश्वर) हरिद्वार मंदिर के महंत, गोलोक स्वामी,मूली से मुकुंद स्वामी, माणसा मंदिर के महंत और अनेक संत पधारे थे।

- *शा. स्वा. रामकृष्णदासजी*

कनीपुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में शाकोत्सव दि. १३-१-०४ को कोटेश्वर गुरुकुल में धीरूभाई पटेल के यजमान स्थान पर हुआ था। जिसमें गाँव के भक्तो ने भाग लिया था। साथ में कीर्तन भक्ति और सत्संग का लाभ शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा अन्य सभी संतो ने किया था। इस दिव्य अवसर के आयोजन छोटे पी.पी.स्वामी (कोटेश्वर) ने किया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभीको आशीर्वाद दीये थे। - *पटेल कल्पेश डी*

नवा वाडज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से दि.२८-१२-०३ को श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में नारायणघाट के महंत शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदास और छोटे पी.पी. स्वामी (कोटेश्वर) आये थे। मुख्य यजमान प.भ. भीखाभाई गोविंदभाई परमार, सह यजमान प.भ.मगनभाई केशवभाई चौहान रहे थे।

- *शंभुभाई हीराजीभाई पटेल*

मथुरा मंदिर

प.पू. लालजी महाराजश्री री प्रेरणा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर, मथुरा में "शिक्षापत्री जयंती" (वसंत पंचमी) के शुभ दिवस समूह महापूजा तथा शिक्षापत्री वांचन का आयोजन किया गया था। मथुरा के हरिभक्त भी आये थे। महाप्रसाद की व्यवस्था पूजारी स्वामी सर्वेश्वरदासजी ने की थी। - *कोठारी नरेन्द्रभगत*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

ईश्वर नगर मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

मूली श्री राधाकृष्णदेव की कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ईश्वर नगर गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का भव्य निर्माण मूली मंदिर एवं छोटे पी.पी. स्वामी (कोटेश्वर) के सहयोग से किया गया है।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १-१२-०३ से १५-१२-०३ तक श्रीमद भागवत पारायण शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त त्रिदिवसात्मक हरियाग का भी आयोजन हुआ था। सांस्कृतिक

कार्यक्रम द्वारा सभी को आनंदित किया गया था। पूर्णाहुति ता.१५-१५-०३ की रात्रि में सर्व प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब मूली में पधारे तब संत हरिभक्तो ने खूब स्वागत किया और ठाकुरजी की प्रतिष्ठा विधि तथा आरती करके सभी को दर्शन का दिव्यलाभ दिया था।

प्रासंगिक सभा में विद्वांन संतो ने प्रसंगानुस्म प्रवचन किये और अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को आर्शीवाद दिया।

इस प्रसंग पर पू. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी पू. स्वा. देवप्रकाशदासजी पू. अ.नि. शा. गोपालचरणदासजी के शिष्यमंडल, ब्र. स्वा. राजेश्वरानन्दजी, पू. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी खूब सहकार दिये।

- शा.रामकृष्णदासजी कोटेश्वर

श्री स्वामिनारायण मंदिर लूंटावदर में मूर्तिप्रतिष्ठा धूमधाम से संपन्न

सौराष्ट्र-कच्छ में आये हुए विनाशक भूकंप में सम्पूर्ण गाँव धराशाई हो गया था। स्वा. गोपालचरणदास के समय में निर्मित मन्दिर भी धराशाई हो गया था, जिसे देखकर पू.महाराजश्री द्रवीभूत हो गये और उस समय के महंत स्वा.देवप्रकाशदासजी को पुनःमदिर निर्माण की आज्ञा की। जिससे शा.स्वा.हरिकृष्णदास शा. गोविन्दप्रसाददास, जे. पी. स्वामी, हरिप्रकाशदास, ब्र .राजेश्वरानंदजी, छोटे पी. पी., पा. मनसुखभगत के सहकार से, आत्मीय हरिभक्तो के सहयोग से मूली श्री राधाकृष्णदेव देश का भव्य मंदिर तैयार हो गया।

ता. २५-११-०३ से ता.२९-११-०३ पर्यन्त ग्रामजनो के सहयोग से मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें श्रीमद् भागवत पन्चाह्न पारायण शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदास तथा स्वा. रामकृष्णदासने अपनी सुमधुर वाणी में सभी को रसास्वाद कराया। त्रिदिवसीय याग भी सम्पन्न हुआ पूर्णाहुति के दिन प.पू. महाराजश्री का आगमन हुआ। सभी ने खूब स्वागत किया। पश्चात महाराजश्री के शुभ हाथो से सभी देवो की प्रतिष्ठा की गई। सभी सन्तो ने प्रासंगिक प्रवचन किये और अन्त में महाराज श्री ने आशीर्वाद दिया। स्वा.कृष्ण वल्लभदासजी का मार्दगर्शन उत्तम रहा।

- छोटे पी.पी.स्वामी

श्री स्वमिनारायण मंदिर (जेतपुर-कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा संप्पन हुई

गुजरात में आया हुआ विनाशकारी भूकंप माणीया मोरबी के तहसील में विनाशकारक था। तथा जेतपुर में महासमर्थ श्री अवदातानंद स्वामी द्वारा निर्मित तथा प.पू .आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्राण प्रतिष्ठित १२५ वर्ष पुराना मंदिर भी धराशायी हो गया था। उसके बाद कस्णामूर्ति प.पू. वर्तमान पीठाधिपति महाराजश्री ने उस समय के नारायणघाट के महंत छोटे पी.पी. स्वामी को पुनःनिर्माण करने की आज्ञा की फलस्वस्म शा. स्वा. हरिकृष्णदास, देव स्वामी तथा अन्य सन्तो के सहयोग से एवं आत्मीय हरिभक्तो के सहयोग से मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। मंदिर तैयार होके ही समस्त ग्रामजनो के सहयोग से ता. २७-११-०३ से ३-१२-०३ पर्यन्त मूर्तिप्रतिष्ठा पारायण तथा त्रिदिवसात्मक यज्ञ का आयोजन किया गया। श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। संहिता पाठमें स्वा.व्रजवल्लभदास बिराजमान हुए।

महोत्सव में लोककलाकार श्रीखीमजी भाई भरवाड ने भक्ति पूर्ण रस में सभी को आनंदित किया।

ता. ३-१२-०३ को प.पू.ध.धु. आचारपय महाराज श्री जब पधारे तब सभी हरिभक्तो ने उत्तम स्वागत किया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने पुस्म तथा स्त्रियो के मंदिर में पुनःप्राण प्रतिष्ठा विधि किया। प्रासंगिक सभा में संतोने प्रवचन किया। अन्त में पू.महाराजश्रीने सभी को आर्शीवाद दिया।

-श्री.न.ना.दे.यु.मं. जेतपुर मच्छु

खोलडीयाग गाँव में श्रीमद् भागवत पारायण

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावी लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. श्रीजीप्रकाशदास की प्रेरणा से षष्टिपूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में खोलडीपाद गांव में त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत तथा विष्णुयाग एवं पू. महाराजश्री का रक्त तुलाका भव्य आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर गुजरात के गर्वनर तथा संसद सभ्य लोग उपस्थित थे। अहमदावाद, मूली से बहुत संत पधारे हुए थे। ५७० जितने युवानो नें रक्तदान किये थे। शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी कथा का रसपान कराया। षष्टिपूर्ति की महिमा तथा धर्मकुल की महिमा का वर्णन किया गया। प.पू. महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आर्शीवाद दिया रामजीभाई गोहिती यजमानपद का लाभ लिया।- *शा.स्वा.रामकृष्णदासजी*

हळवद विस्तार के गाँवो में षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में धुन का आयोजन

प.पू. लालजी महाराज श्री की आज्ञा से हलवद के स.गु.स्वा.श्रीजी स्वस्म दासजी की प्रेरणा से षष्ठि पूर्ति के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण नगर, श्रीजीनगर, भक्तिनगर, चंद्रगढ, श्री नरनारायणनगर इत्यादि गाँवो में संत हरिभक्तो ने १२ घंटी

की धुनका आयोजन किया । इस शुभ प्रसंग पर ता. १२-१-०४ के दिन प.पू.भावी आचार्य लालजी महाराजश्री पदार्पण किये थे । साथ में अहमदावाद मंदिर के कोठारी स्वामी तथा अन्य स्थलो से संत आये हुए थे । सभा में सन्तो नें षष्टिपूर्ति के सन्दर्भ में समझाया था । अंतमें प.पू. लालजी महाराजने सभी सभाजन को आर्शीवाद दिया ।

- चंद्रलाल चराडवा

लींबडी मंदिर में शाकोत्सव तथा ६० धंटे की धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावी आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स्वामी नारायणप्रसाददासजी (मूली) के सहयोग से तथा स्वा. सत्संगप्रकाशदास एवं स्वामी भगतवत्सलदास की प्रेरणा से ता. १९-१-०४ के दिन बालस्वरूप घनश्याम महाराज के सांनिध्य में पू.लालजी महाराज के शुभ हाथो से शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । श्री न.ना.दे.यु.मं. के ६० नवयुवक सभा धारी संतो के साथ ३२ फुट के हार से स्वागत किया । तथा महिला मंडल ने षष्ठि पूर्ति के उपलक्ष्य में मंदिर में ६० धन्टे की धुन किया था ।

- हिमतलाल सोनी

शीयाणी (ता. लींबडी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में यहां पर पौषवद पंचमी के दिन विविध कार्यक्रमो का आयोजन किया गया धनुर्मास में प्रभातफेरी, ६० धन्टे की धुन में बडी संख्या में हरिभक्त उपस्थित रहे प्रथम पाटोत्सव के उपलक्ष्य में होमात्मक यज्ञ, अन्नकूट दर्शन शाकोत्सव इत्यादि कार्य किये गए । मूली से कृष्णप्रसाददास धागंध्रा से रामकृष्ण दास इत्यादि सन्तों ने कथा वार्ता का सुन्दर लाभ दिया ।

- डॉ.गंभीरभाई परमार

धमासणा

श्री न.ना.दे.यु.मं. तथा गांव के हरिभक्तो द्वारा २१-१२-०३ के दिन शाकोत्सव का आयोजन किया गया प.पू.आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो से शाकोत्सव मनाया गया । स्वामी श्री विष्णुप्रसाददासजी की प्रेरणा से शाकोत्सव का सुन्दर आयोजन किया गया । ता. १८-१-०४ के दिन पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. आचार्य महाराजश्री की षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में १२ घन्टे की धुनि की गयी । दोनो प्रसंगो में बहुत सारे हरिभक्त उपस्थित रहे । *- प.भ. लालभाई पटेल स्कीम कमिटी माजी मेम्बर*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

I.S.S.O. वोशिंग्टन डी.सी. चेप्टर

३ जनवरी को सायं ३ बजे सत्संग सभा में संगीत कीर्तन तथा वचनामृत वांचन किया गया । नित्य, नियम, थाल, आरती इत्यादि समूह में किया गया । प.पू.आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा आशीर्वाद से सभा सत्संग नियमित होता है । *- कनुभाई पटेल*

सीडनी (ओस्ट्रेलीया I.S.S.O. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री तथा भावी आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग प्रवृत्ति उत्तम चल रही है । सत्संग सभा नीचे के अनुसार हुई ।

ता. १२-१०-०३ श्री महेशभाई त्रिवेदी, श्री दिलीप दरजी।

ता. २६-१०-०३ श्री जनकभाई पटेल श्री हिमांशुं शाह अन्नकूट उत्सव

ता. ९-११-०३ श्री महेशभाई अमीन श्री भाविनभाई मंदिर की प्रथम सभा

ता. २३-११-०३ I.S.S.O. सत्संगी

ता. ४-१२-०३ श्री विरेनभाई देसाई

ता.२१-१२-०३ को भुज के सन्तो नें प्रेरक प्रवचन किये । हरिभक्तो की संख्या अधिकमत्रा में थी । श्री महेशभाई त्रिवेदी गीता की सुन्दर समझ कराते है ।

- जीगर दरजी

अक्षरनिवासी संत हरिभक्तों को भाव पूर्वक श्रद्धांजलि

मूली:- मूली मंदिर के स्वामी श्री माधवप्रसाददासजी (जोडीयावाला) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी है ।

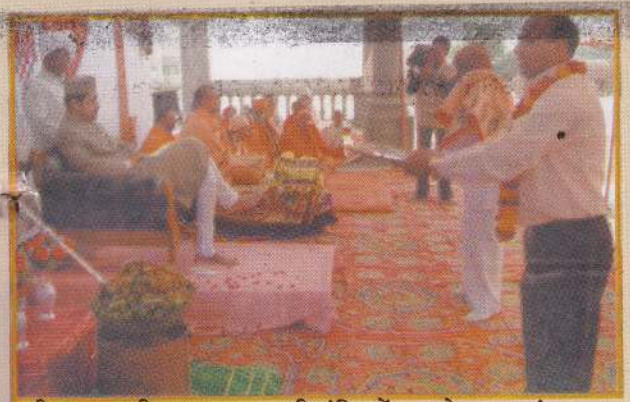
राजकोट:- श्री स्वामिनारायण अंक के प्रतिनिधि प.भ.नारायणभाई टांक के पिताश्री प.भ.पोपटभाई टांक दि.१-१२-०३ को श्री हरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

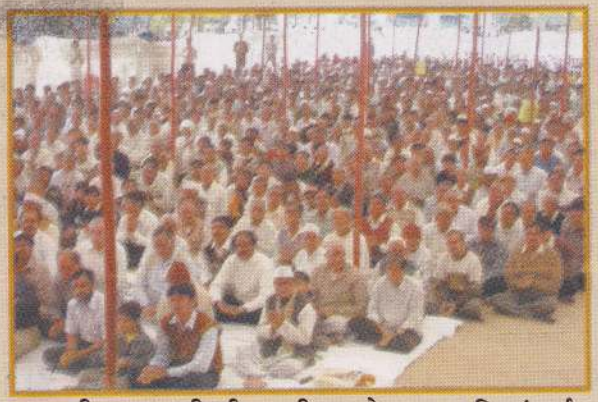
अहमदाबाद:- अहमदाबाद मंदिर के गौर प.भ.श्री प्रविणभाई दि.२३-१-०४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद:- प.भ. किरीटभाई (एन्जीनीयर) के पिताश्री तथा श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान अग्रगण्य हरिभक्त प.भ.नविनचद्रभाई गीरधरलाल पंड्या श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

विरमगाँव :- प.भ. सोनी बळदेवभाई लीलाधरभाई दि. १४-१-०४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

डेमाई (साबरकांठा):- प.भ. पटेल जेरांगभाई रेवाभाई ९६ वर्षकी उम्र में श्रीहरिका अकंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।





जमीयतपुरा श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारते हुए प.भ.विष्णुंभाई जोइताराम पटेल (यजमान डांगरवा) भक्तजन को कथाका रसपान कराते हुए पूज्य पी.पी.स्वामीजी ।



आत्यंतिकार्य क्षेम श्री नरनारायण देव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज श्रीना षष्ठिपूर्ति महोत्सवना उपलक्षमां प.पू. १०८ भावी आचार्य श्री कीशवेन्द्र प्रसादजी महाराज श्री नी उपस्थितिमां अेक व्यसनमुक्ति पदयात्रा-सोभायात्रानुं आयोजन करायेल जेमां विद्वान संत मंडण सहीत श्रीजी महाराजना लाडीला हजारो भाविक भक्तजनो हैये हैयु दबाय अेवी अेक की.मी. लांबी पदयात्रामां षडाक्षरी श्री स्वामिनारायण महामंत्रनी धून-भक्ति-किर्तन करतां अने व्यसन मुक्तिना बेनरो साथे नगरना महत्तम मार्गो उपरथी पसार थयां हतां. रेली आराम गृहथी निकणी बस स्टेन्ड, मुख्य बजार, श्री जोकुलनाथजी मंदिर, श्री रामजी मंदिर अे भावि आचार्यश्रीअे दर्शन करी ही स्वामिनारायण मंदिरे पहोंची.





कांकरिया मंदिर द्वारा षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. लालजी महाराज श्री की उपस्थिति में व्यसन मुक्ति पर्यावरण बचाओ के संकल्प रैली में देशभर के पूज्य सन्त तथा हरिभक्तो ने भाग लिया था ।





जयपुर (राजस्थान) अपने मंदिर में राजस्थान भाजप सरकार के नये मंत्रीजी को प.पू. महाराज श्री का आशीर्वाद पत्र तथा सर्वोपरि श्रीहरिकी प्रतिमा देकर सन्मान करते हुए म.स्वा.गुस्प्रसाददासजी तथा कोठारी आनंद स्वामी (कांकरिया) सभा में पूज्य पी.पी.स्वामीजी तथा देवस्वामी (जयपुर महंत स्वामी)

SHREE SWAMINARAYAN REG. NO. G.A.M.C. 1013 W.P.P. REG. NO. 138

SHRI SWAMINARAYAN REG. NO. GUJ.581



सर्वावतारी श्री हरिने प्रथम के ४८ वें वचनामृत में आज्ञा की है कि सत्संगी मात्र को श्री नरनारायणदेव की मूर्ति पूजा में अवश्य रखनी चाहिए। श्री नरनारायणदेवश्री जी के ही स्वरूप है। महाराजश्री ने यहभी कहा कि हमारे स्वरूप को जानकर हमने अहमदाबाद में सर्वप्रथम श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है ।ऐसे नरनारायणदेव को छोडकर अन्यत्र आश्रय करना हितावह नहीं है अर्थात अन्यत्र आश्रय कभी नहीं करना।



ता. २/४/२००४ थी ता. ८/४/२००४

दी. २-४-२००४ से ८-४-२००४

"JAY SHREE SWAMINARAYAN" NOW TELECAST ON ZEE TV

EVERY SUNDAY U.S.A. 10:00 am (EST) & 8:00 am U.K. (EST)

Prafull Kharani